A Daily News Magazine

इंदौर

रविवार, 30 नवंबर, 2025

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 11 अंक 65, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

रेवा तीरे

बनझर नदी का नर्मदा संगम

फोटो-आनंद सिंह

सुप्रभात

ज्यों ही जुगनू चमन में मचलने लगे,
त्यों अँधेरे के तेवर बदलने लगे।

बादलों ने ज़रा-सा जो सींचा उन्हें,
बीज धरती से बाहर निकलने लगे।

मन में उम्मीद ने ऐसा ईंधन भरा,
ये थके पाँव भी साथ चलने लगे।

जब बड़े लोगों से हो गयी दुश्मनी,
मित्र मुझसे कहीं ज़्यादा जलने लगे।

धूप कैसे सहन होती उनको कहो!
बर्फ़ के थे बने, वे पिघलने लगे।

थार में चार दिन की जो बारिश हुई,
सतपुड़ा बनने के स्वप्न पलने लगे।

लेनदारों ने पहले बहुत छूट दी,
क़िस्त-दर-क़िस्त फिर वे निगलने लगे।

-गरिमा सक्सेना

संघ प्रमुख भागवत बोले-

भारत के स्वभाव में झगड़ा नहीं भाईचारा है

● भारत की राष्ट्रवाद की अवधारणा पश्चिमी सोच से बिल्कुल अलग, वे नेशनहुड नहीं समझते

मुंबई (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत ने शनिवार को कहा, झगड़ों में पड़ना भारत के स्वभाव में नहीं है, देश की परंपरा ने हमेशा भाईचारे और सामूहिक सद्भाव पर जोर दिया है।

उन्होंने कहा कि भारत का राष्ट्रवाद का कॉन्सेप्ट पश्चिमी व्याख्याओं से पूरी तरह अलग है। हमारी किसी से कोई बहस नहीं होती। हम झगड़ों से दूर रहते हैं। दुनिया के दूसरे हिस्से संघर्ष से भरे हालात में बने हैं।

नागपुर में नेशनल बुक फेस्टिवल में भागवत ने कहा- एक बार जब कोई राय बन जाती है, तो उसके अलावा कुछ भी मंजूर नहीं होता। ऐसी राय दूसरी बातों के लिए दरवाजा बंद कर देती हैं। उन बातों को बहस कहा जाता है।

भागवत ने कहा कि पश्चिम देश नेशनहुड के बारे में हमारे विचार नहीं समझते, इसलिए उन्होंने इसे नेशनलिज्म कहना शुरू कर दिया। राष्ट का

हमारा कॉन्सेप्ट वेस्टर्न देशों के नेशन के आइडिया से अलग है। हमारे बीच इस बारे में कोई मतभेद नहीं है कि यह नेशन है या नहीं, यह एक राष्ट है और यह पुराने समय से है।

● **पश्चिमी देश हमारे विचार नहीं समझते-** आरएसएस प्रमुख ने कहा कि पश्चिम देश नेशनहुड के बारे में हमारे विचार नहीं समझते, इसलिए उन्होंने इसे नेशनलिज्म कहना शुरू कर दिया। राष्ट्र का हमारा कॉन्सेप्ट वेस्टर्न देशों के नेशन के आइडिया से अलग है। हमारे बीच इस बारे में कोई मतभेद नहीं है कि यह नेशन है या नहीं, यह एक राष्ट्र है और यह पुराने समय से है। उन्होंने कहा कि अगर हम वेस्टर्न कॉन्टेक्स्ट में नेशन की डेफिनिशन पर विचार करें, तो इसमें आमतौर पर एक नेशन-स्टेट होता है, जिसमें एक सेंट्रल गवर्नमेंट होती है जो इलाके को मैनेज करती है। हालांकि, भारत हमेशा से एक राष्ट्र रहा है, यहां तक कि अलग-अलग सरकारों और विदेशी शासन के समय में भी। उन्होंने कहा कि भारत का नेशनहुड घमंड या गर्व से नहीं बल्कि लोगों के बीच गहरे जुड़ाव और नेचर के साथ उनके को-एग्जिस्टेंस से पैदा हुआ है। सच्ची संतुष्टि दूसरों की मदद करने से मिलती है, यह एहसास जिंदगी भर रहता है, न कि कुछ समय की सफलता से।

● सिद्धारमैया-शिवकुमार ने साथ किया ब्रेकफास्ट, फिर बोले

हमारे बीच कोई मतभेद नहीं, दोनों में कुर्सी को लेकर चल रही है कलह

नई दिल्ली(एजेंसी)। कर्नाटक में मुख्यमंत्री की कुर्सी को लेकर चल रही खींचतान के बीच आज सुबह 1.15 बजे सीएम सिद्धारमैया और डिप्टी सीएम डीके शिवकुमार ने साथ में ब्रेकफास्ट किया। एक घंटे बाद दोनों नेताओं ने जॉइंट प्रेस कॉन्फ्रेंस की। सिद्धारमैया ने कहा- हमारे बीच कोई मतभेद नहीं है और न ही भविष्य में होगा। हम साथ में मिलकर काम करेंगे। वहीं डीके शिवकुमार ने कहा- हाईकमान जो भी कहेगा, हम उसका पालन करेंगे और कोई ग्रुप नहीं है। मैं मुख्यमंत्री के साथ हूं, कर्नाटक के विकास को प्राथमिकता देंगे। दरअसल दोनों नेताओं की ये मुलाकात हाईकमान के आदेश के बाद हुई है। पिछले 15 दिनों से दोनों गुटों के कार्यकर्ता अपने-अपने नेता को सीएम पद पर देखना चाह रहे है।

सीएम आयुष्मान बाल-संबल योजना अब बड़े मरीजों पर भी लागू

जोधपुर (एजेंसी)। राजस्थान हाईकोर्ट की जोधपुर पीठ ने मस्कुलर डिस्ट्रॉफी जैसी दुर्लभ बीमारी से पीड़ित मरीजों के उपचार को लेकर आदेश दिया है। इसमें अंतरिम आदेश पारित करते हुए मुख्यमंत्री आयुष्मान बाल संबल योजना-2024 की उम्र सीमा हटा दी है।

जस्टिस डॉ. पुष्पेंद्र सिंह भाटी और जस्टिस अनुरूप सिंघी की डिवीजन बेंच ने स्पष्ट किया कि अगला आदेश आने तक योजना की अनुच्छेद 5 की कंडीशन-1 सभी आयु वर्ग के लोगों पर लागू मानी जाएगी। सिर्फ 18 साल से कम उम्र के मरीजों तक सीमित नहीं रहेगी। स्वावलंबन फाउंडेशन की ओर से इस मुद्दे को लेकर याचिका दायर की गई थी। याचिकाकर्ता संस्था की तरफ से सीनियर एडवोकेट डॉ. सचिन आचार्य ने दलीलें रखीं।

मुख्यमंत्री ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय बस स्टैंड पर रिक्शा संचालकों और बस यात्रियों से की चर्चा

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव शनिवार को उज्जैन में नानाखेड़ा के पं. दीनदयाल उपाध्याय बस स्टैंड पहुंचे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि बस स्टैंड से अंतरराज्यीय बसें संचालित की जाती हैं। साथ ही राज्य के विभिन्न शहरों में आवागमन के लिए भी यहां से बसें संचालित होती हैं। मुख्यमंत्री ने यहां पर व्यवस्थाओं का जायजा लिया और यात्रियों, ऑटो रिक्शा संचालकों से चर्चा भी की।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बस स्टैंड पर चाय बनाई और चर्चा भी की

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बस स्टेंड पर बस यात्रियों और स्थानीय दुकानदारों से चर्चा की। उनकी समस्याओं को सुना। साथ ही एक चाय की दुकान पर चाय भी बनाई और नागरिकों से चाय पर चर्चा की। मुख्यमंत्री के सादगीपूर्ण व्यवहार की नानाखेड़ा बस स्टैंड के स्थानीय लोगों ने प्रशंसा की । इस अवसर पर प्रभारी मंत्री श्री गौतम टेटवाल एवं जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे।

उज्जैन में मतदाताओं से चर्चा कर एसआईआर कार्य में सहभागिता के लिए प्रोत्साहित किया

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने उज्जैन में उज्जैन दक्षिण विधानसभा के बूथ क्रमांक 165 के मतदाताओं से राजनंदिनी परिसर पहुँच कर एसआईआर पर चर्चा की। मुख्यमंत्री डॉ यादव ने वहां एकत्रित मतदाताओं को चुनाव आयोग द्वारा विशेष गहन पुनरिक्षण (एसआईआर) कार्य की जानकारी देकर अन्य लोगों को भी जागरूक करने का आहवान किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव मतदाताओं को जानकारी दी कि वर्ष 2003 की मतदाता सूची की जानकारी बीएलओ के माध्यम से प्राप्त कर गणना पत्रक भरकर बीएलओ को शीघ्र वापस दें जिससें एसआईआर का कार्य शीघ्रता से पूर्ण हो सकें। उन्होंने नागरिकों को एसआईआर के कार्य में अधिक से अधिक संख्या में सहभागिता करने के लिए प्रेरित किया

साइक्लोन दितवाह के चलते तमिलनाडु में बारिश, 54 फ्लाइट्स कैंसिल

चेन्नई (एजेंसी)। श्रीलंका में तबाही मचाने के बाद साइक्लोन दितवाह भारत की तरफ तेजी से बढ़ रहा है। तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और पुडुचेरी के तटीय इलाकों में भारी बारिश के साथ तेज हवाएं शुरू हो चुकी थी इसके और तेज होने की संभावना है। तमिलनाडु में भारी बारिश के कारण 54 उड़ानें रद्द कर दी गई थी। पुडुचेरी सेंट्रल यूनिवर्सिटी ने साइक्लोन के कारण शनिवार को छुट्टी घोषित करते हुए सभी परीक्षाएं स्थगित कर दी हैं। पुडुचेरी, कराईकल, माहे और यनम में सभी स्कूल और कॉलेज सोमवार तक बंद रहेंगे।

श्रीलंका में दितवाह के कारण बाढ़ और लैंडस्लाइड से 123 से ज्यादा लोगों की मौत हो गई है। 130 से ज्यादा लापता हैं। चेन्नई की फ्लाइट्स कैंसिल होने के कारण कोलंबो एयरपोर्ट पर लगभग 300 भारतीय यात्री पिछले तीन दिनों से फंसे हुए हैं। ये सभी दुबई से श्रीलंका के रास्ते भारत आने वाले थे।

श्रीलंका में 123 लोगों की मौत, 200 भारतीय फंसे

भारत ने श्रीलंका की मदद के लिए ऑपरेशन सागर बंधु लॉन्च किया- भारत ने साइक्लोन दितवाह से तबाही के कारण श्रीलंका की मदद के लिए शनिवार को ऑपरेशन सागर बंधु लॉन्च किया। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने एक्स पर बताया कि भारतीय वायुसेना का आईएल-76 एयरक्राफ्ट कोलंबो पहुंच गया है। एनडीआरएफ के 80 कर्मियों की टीमों के साथ हवाई और समुद्री मार्ग से अब लगभग 27 टन राहत सामग्री पहुंचाई गई है।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 30 °c
न्यूनतम 25°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 30 नवंबर 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

पूर्व एसीपी की साली चला रही सेक्स रैकेट

- कूरियर कंपनी की आड़ में लड़कियों की सप्लाई

कानपुर (एजेंसी)। कानपुर में कूरियर कंपनी की आड़ में सेक्स रैकेट चल रहा था। रैकेट में दिल्ली पुलिस के पूर्व अधिकारी की साली भी शामिल थी।

गैंग वॉट्सऐप और टेलीग्राम के जरिए ऑन डिमांड लड़कियों की सप्लाई करता था। इसका नेटवर्क यूपी समेत अन्य राज्यों में भी फैला है। इसमें उन्नाव के रहने वाले एक ट्रांसपोर्टर की पत्नी भी शामिल थी। ट्रांसपोर्टर ने कई बार इसकी शिकायत की, लेकिन एफआईआर दर्ज नहीं हुई।

दिल्ली धमाका-आतंकी शाहीन के फ्लैट से 18.50 लाख मिले

- अल-फलाह यूनिवर्सिटी में सीक्रेट लॉकर में छिपाए थे

फरीदाबाद (एजेंसी)। दिल्ली ब्लास्ट मामले की जांच नेशनल इन्वेस्टीगेशन एजेंसी (एनआईए) कर रही है। इसी कड़ी में

आतंकी मॉड्यूल में शामिल डॉ. शाहीन सईद के फरीदाबाद स्थित अल-फलाह यूनिवर्सिटी के फ्लैट से 18.50 लाख कैश सहित सोने के बिस्किट और गहने मिले है। अलमारी से अरब देशों की करेंसी भी मिली है।

बंगाल में 8 महीने बाद वक्फ संशोधन कानून लागू

- गोली मार दो, लेकिन धर्म के आधार पर बंटवारा नहीं होगा

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल में ममता सरकार 8 महीने के विरोध के बाद नए वक्फ संशोधन कानून को लागू करने पर राजी हो गई है। राज्य सरकार ने सभी जिलाधिकारियों को निर्देश दिया है कि राज्य की

8063 वक्फ संपत्तियों की जानकारी 6 दिसंबर 2025 तक केंद्र सरकार की यूएमआईडी वेबसाइट पर अपलोड करें।

वक्फ संशोधन कानून इस साल 4 अप्रैल को संसद के दोनों सदनों से पास हुआ था। तब पश्चिम बंगाल ने इसे अपने राज्य में लागू करने से मना कर दिया था। सीएम ममता बनर्जी ने 8 अप्रैल को एक रैली में कहा था कि जब तक पश्चिम बंगाल में ममता दीदी है, मुस्लिम समुदाय की संपत्ति की रक्षा करेगी। चाहे कोई गोली मार दे, मुझे एकता से अलग नहीं किया जा सकता। बंगाल में धर्म के नाम पर बंटवारा नहीं होगा।

- कर्नाटक कांग्रेस में कलह पर डीके शिवकुमार ने कहा

'हमें जो मैसेज देना था, दे दिया...'

नईदिल्ली (एजेंसी)। कर्नाटक में बीते एक हफ्ते से कांग्रेस के भीतर जारी राजनीतिक कलह अब शांत होती दिख रही है। सुबह मुख्यमंत्री सिद्दरमैया और उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार की नाश्ते पर तस्वीर सामने आई। अंदरखाने चीजों में कितना

सुधार हुआ है ये तो नहीं कहा जा सकता लेकिन बाहर ऑल-इज-वेल दिखाने की कोशिश जरूर की जा रही है।मुख्यमंत्री के साथ नाश्ता करने का बाद डीके शिवकुमार ने कहा, हमें जो भी मैसेज देना था, मुख्यमंत्री और मैंने सभी कांग्रेस सदस्यों को दे दिया है। हम उस पर कायम हैं, हम उसके लिए कमिटेड हैं। बहुत सारे मुद्दे हैं, खासकर सिंचाई और शहरी विकास। मुझे दिल्ली जाना है। मुझे सेंट्रल मिनिस्टर्स के साथ भी टाइम फिक्स करना है। अचानक, मैं नहीं जा सकता।

सीएम योगी बोले-

कब्जा करने वालों की कमर सीधी की,इतना कूटा कि उस पर फैक्ट्री बनवा रहे, अब माफिया गायब, दंगे बंद

गोरखपुर (एजेंसी)। 8 साल पहले यूपी में क्या स्थिति थी? जाति के नाम पर लड़ाया जाता था, भाषा के नाम पर बांटा जाता था। तुष्टीकरण की नीति पर चलकर अराजकता पैदा की जाती थी। कर्फ्यू जैसा माहौल बनाया जाता था। यह सपा-कांग्रेस करती थी। गुंडागर्दी पैदा कर व्यापारी

की प्रॉपर्टी पर कब्जा करते थे। गरीब की जमीन पर कब्जा करना ये लोग अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझते थे। जब डबल इंजन की सरकार आई, तो आपने देखा होगा कि इन कब्जा करने वालों की कमर हमने सीधी कर दी। इतनी कुटाई हुई कि उसके ऊपर हम लोग अब फैक्ट्री बनवा रहे। अब गुंडागर्दी बंद, माफिया गायब हो गए, दंगे बंद हो गए। उपद्रव का प्रदेश उत्तर प्रदेश, अब उत्सव का प्रदेश बन गया है। यह बात सीएम योगी ने शनिवार को गोरखपुर में कही। वह गोरखपुर औद्योगिक विकास प्राधिकरण के 36वें स्थापना दिवस पर बोल रहे थे। योगी ने कहा- ठीक 36 साल पहले आज के ही दिन गोरखपुर विकास प्राधिकरण की स्थापना हुई थी। लेकिन, स्थापना के साथ ही इस पर कुछ बीमारियों ने हमला शुरू कर दिया था।

'एयरबस' के 6000 विमानों को किया गया रिकॉल, बड़ा खतरा टला?

- भारत में इंडिगो, एअर इंडिया ग्रुप की 338 फ्लाइट्स प्रभावित

सॉफ्टवेयर अपडेट हो रहा, दुनियाभर में एयरबस के ए320 विमानों में सोलर रेडिएशन का खतरा

नईदिल्ली (एजेसी)। दुनिया भर के हवाई यात्रियों और एयरलाइंस समेत पूरी एविएशन इंडस्ट्री में खलबली मचा दी है। विमान बनाने वाली फ्रांस की दिग्गज कंपनी 'एयरबस' ने एक चौंकाने वाला फैसला लिया है। विमान निर्माता ने अपने सबसे लोकप्रिय ए-320 सीरीज के करीब 6,000 विमानों में तकनीकी चिंताओं के कारण बदलाव की जानकारी दी है। कंपनी ने इसके पीछे अहम 'सॉफ्टवेयर अपडेट' को वजह बताया है, लेकिन इतनी बड़ी तादाद में विमानों के एक साथ ग्राउंड होने से उड़ानों का शेड्यूल चरमराना तय माना जा रहा है। इसका सीधा असर अब यात्रियों की जेब और समय पर पड़ेगा। दुनिया में सबसे ज्यादा बिकने

वाले एयरबस के ए320 सीरीज के एयरक्राफ्ट्स पर तेज सोलर रेडिएशन का खतरा मंडरा रहा है। यह फ्लाइट कंट्रोल डेटा को खराब कर सकता है, जिससे एयरक्राफ्ट्स की ऊंचाई, डायरेक्शन, कंट्रोल जैसी बेहद अहम जानकारी गलत हो सकती है।इस तकनीकी खराबी से बचने के लिए फ्रांस की विमानन कंपनी एयरबस ने सभी एयरलाइन कंपनियों से उनके बेड़े में शामिल ए320 सीरीज के विमानों के सॉफ्टवेयर अपडेट करने के निर्देश दिए हैं।

- **अमेरिकी फ्लाइट में गड़बड़ी के बाद अपडेट का फैसला-** यूरोपियन यूनियन एविएशन सेफ्टी एजेंसी ने एक बयान में बताया कि हाल ही में अमेरिकी एयरलाइन जेटब्लू के एक ए320 विमान में पायलट के कमांड के बिना पिच डाउन की घटना हुई। 30 अक्टूबर, 2025 को कैनकन से नेवार्क के लिए उड़ान भरने के दौरान विमान अचानक नीचे की ओर झुकने लगा। ईएएसए के अनुसार, विमान सुरक्षित तरीके से लैंड हो गया था। कुछ यात्रियों को अस्पताल में भर्ती कराया गया। हालांकि, एयरबस की प्रारंभिक जांच में एक सर्विसेबल एलिवेटर एलरॉन कम्प्यूटर में खराबी को इस घटना का संभावित कारण बताया गया।

प्राकृतिक खेती के लिए गौपालन आवश्यक है: शुक्ल

बसामन मामा गो-अभयारण्य में 25 दिसंबर को होगा प्राकृतिक खेती सम्मेलन

भोपाल। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने बसामन मामा गो-अभयारण्य का भ्रमण करते हुए कहा कि बसामन मामा गो-अभयारण्य के आसपास का क्षेत्र विन्ध्य में प्राकृतिक खेती का केन्द्र बनेगा। प्राकृतिक खेती के लिए गौपालन आवश्यक है। कृषि क्षेत्र को मजबूत करने के लिए भी पशुपालन आवश्यक है। बसामन मामा गो-अभयारण्य में 25 दिसंबर को स्व. प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी का जन्म-दिन मनाया जायेगा। इस दिन अभ्यारण्य में प्राकृतिक खेती का सम्मेलन आयोजित किया जायेगा। सम्मेलन में कृषि विशेषज्ञ तथा प्राकृतिक खेती से जुड़े किसान भाग लेंगे। सम्मेलन क्षेत्र में प्राकृतिक खेती के विकास के प्रयासों को गति देगा।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि बसामन मामा गो-अभयारण्य में 8 हजार से अधिक निराश्रित गौवंश को आश्रय दिया गया है। इनके गोबर और गोमूत्र का उपयोग करके आसपास के क्षेत्र को रासायनिक खाद के उपयोग से मुक्त किया जा सकता है। गो-अभयारण्य में प्राकृतिक खेती और जैविक खेती को बढ़ावा देने के साथ दुधारु पशुओं के नस्ल सुधार, महिला स्व-सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं के सशक्तिकरण पर भी बल दिया जा रहा है। गो-अभयारण्य के पांचों प्रकल्प पूरी क्षमता से कार्य कर इसे आदर्श गौशाला बना रहे हैं। बसामन मामा गो-अभयारण्य आसपास के क्षेत्रों के लिए प्राकृतिक खेती का केन्द्र बनेगा। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि 25 दिसंबर को अटल जी के जन्म-दिन पर एक विशाल कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। इसकी सभी तैयारियां समय पर पूरी कर लें। निर्माणाधीन भोजन शाला का निर्माण अनिवार्य रूप से पूरा करायें। गो-अभयारण्य में बिजली की निर्बाध आपूर्ति की व्यवस्था करें। विद्युत सब स्टेशन का निर्माण कार्य स्वीकृत हो गया है। एसडीएम सिरमौर तत्काल निर्माण कार्य के लिए जमीन उपलब्ध करायें। विद्युत मंडल के अधिकारी तत्काल निर्माण कार्य दो माह में प्रारंभ करें। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने गौशाला का भ्रमण कर निर्माण कार्यों का जायजा लिया। उप मुख्यमंत्री ने पानी की आपूर्ति, परिसर की साफ-सफाई तथा सौन्दर्यीकरण के संबंध में अधिकारियों को निर्देश दिये। इसके बाद उप मुख्यमंत्री ने ग्राम पुरवा में पंचमुखी हनुमना के निर्माणाधीन मंदिर का अवलोकन किया। इसका निर्माण समाजसेवी श्री मनोज शुक्ला द्वारा कराया जा रहा है। उप मुख्यमंत्री ने बसामन मामा धाम पहुंचकर पूजा-अर्चना की तथा क्षेत्र के विकास और कल्याण की कामना की। इस अवसर पर एसडीएम सिरमौर दृष्टि जायसवाल, कार्यपालन यंत्री हाउसिंग बोर्ड श्री अनुज प्रताप सिंह, श्री अभय जयरामदास, श्री आशीष शुक्ला तथा अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

पंजाब में दूसरे दिन भी सरकारी बसों का चक्काजाम

- हड़ताल में शामिल कई कर्मचारी सस्पेंड

बटाला (एजेंसी)। पंजाब रोडवेज, पनबस, पीआरटीसी कॉन्ट्रैक्ट वर्कर्स यूनियन की हड़ताल शनिवार को दूसरे दिन भी जारी थी। बटाला के रोडवेज डिपो में सरकारी बसों का चक्का जाम रहा। पंजाब रोडवेज की सिर्फ सात बसें ही चलीं। इस बीच सरकारी बस सर्विस बंद होने से पूरे राज्य में ट्रांसपोर्ट सिस्टम में बड़ी रुकावट आई और जनता को लगातार मुश्किलों का सामना करना पड़ा। इस बीच हड़ताली कर्मचारियों और सरकार के बीच टकराव और बढ़ गया है। पंजाब सरकार ने हड़ताल में शामिल कई कर्मचारियों को तुरंत सस्पेंड कर दिया है।

गोवा में आईएफएफआई 2025 का समापन

रजनीकांत को मिला लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड

गोवा (एजेंसी)। 56वें फिल्म फेस्टिवल ऑफ इंडिया (आईएफएफआई) 20 नवंबर 2025 को गोवा में शुरू हुआ था। नौ दिनों तक चले इस फेस्टिवल में दुनिया भर के कई फिल्ममेकर्स और कलाकार शामिल हुए। क्लोजिंग सेरेमनी में गोवा के मुख्यमंत्री डॉ. प्रमोद सावंत और सूचना एवं प्रसारण राज्य मंत्री डॉ. एल. मुरुगन शामिल हुए।

रजनीकांत को मिला सम्मान- रजनीकांत को भारतीय सिनेमा में 50 साल पूरे करने पर लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड से नवाजा गया। रजनीकांत सुबह ही गोवा पहुंचे थे, जहां होटल स्टाफ और फैंस ने उनका स्वागत किया। सोशल मीडिया पर आए वीडियो में वे ढोल-नगाड़ों की गूंज के बीच विनम्रता से फैंस का अभिवादन करते नजर आए। शाम को उनका परिवार भी समारोह में शामिल हुआ।

राहुल गांधी ने अपने 6 विधायकों के साथ बैठक

बिहार कांग्रेस कमेटी की 1 दिसंबर को बैठक

- राजेश राम करेंगे अध्यक्षता, 14 दिसंबर को वोट चोरी के खिलाफ प्रदर्शन

पटना (एजेंसी)। मल्लिकार्जुन खरगे के आवास पर बैठक हुई। इसमें राहुल गांधी ने अपने सभी विधायकों को बिहार विधानसभा सत्र के दौरान वोट चोरी का मुद्दा तेजी से उठाने को कहा। सूत्रों के मुताबिक इस बैठक में बिहार के नेताओं ने प्रदेश कांग्रेस के भीतर आंतरिक कलह, टिकट बंटवारे में देरी को चुनाव में हार की कुछ वजहों के तौर पर गिनाए।

एसआईआर के दुरुपयोग के अलावा महागठबंधन की बुरी तरह हार के पीछे राजद के फ्रेंडली फाइट की जिद को बड़ी भूमिका बताया। टिकट वितरण से लेकर आपसी समन्वय में राजद का उदासीन रवैया भी एक वजह बनी।

नेशनल हेराल्ड केस पर फैसला तीसरी बार टला

नई दिल्ली (एजेंसी)। नेशनल हेराल्ड केस में दिल्ली की राउज एवेन्यू कोर्ट का फैसला तीसरी बार टल गया है। कोर्ट

का यह तय करना है कि मनी लॉन्ड्रिंग केस में ईडी की चार्जशीट पर संज्ञान लें या नहीं। चार्जशीट में प्रिवेंशन ऑफ मनी लॉन्ड्रिंग एक्ट के तहत सोनिया गांधी, राहुल गांधी, सैम पित्रोदा, सुमन दुबे और दूसरे कई सीनियर कांग्रेसी नेताओं के नाम हैं।

छोटे भाई के बाद बड़े भाई ने भी फांसी लगाई

- चित्रकूट में 36 घंटे में दो भाइयों की मौत से सदमे में परिवार

चित्रकूट (एजेंसी)। चित्रकूट के भदेदू गांव में 36 घंटे के भीतर दो सगे भाइयों की मौत से सनसनी फैल गई है। छोटे भाई की छत से गिरकर संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई, जबकि बड़े भाई का शव पेड़ से लटका मिला। गांव में अवैध संबंध को लेकर विवाद की चर्चा है। पुलिस मामले की जांच कर रही है, और पोस्टमार्टम रिपोर्ट में छोटे भाई की मौत का कारण चोट लगना बताया गया है। लापता बड़े भाई का शव शनिवार की सुबह अपने डेरा पर कटहल के पेड़ से लटका मिला।उसने अपने लोअर व गमछा का फंदा बनाकर आत्महत्या की थी।

एसआईआर में टॉप परफॉर्मर बीएलओ

हेलीकॉप्टर जॉय राइड और 'आइलैंड' घूमने का प्रशासन ने दिया तोहफा

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में मतदाता सूची गहन पुनरीक्षण (बीएलओ) काम के दौरान बीएलओ के तनाव, काम के दबाव और कुछ बीएलओ की मौतों की खबरों के बीच राहतभरी खबरें भी सामने आ रही हैं। कुछ बीएलओ ने फील्ड में जाकर अथक मेहनत कर समय से पहले एसआईआर का 100 फीसदी काम पूरा कर दिया। प्रशासन ने न सिर्फ इनकी सराहना की बल्कि इन्हें ईनाम भी दिया जा रहा है। सतना में एक बीएलओ को 'सरसी आईलैंड' घूमने के तोहफे के बाद अब जबलपुर में महिला बीएलओ को उपहार में 'हेलीकॉप्टर जॉय राइड ' का तोहफा मिला है। जानकारी अनुसार जबलपुर में एसआईआर काम में बीएलओ सुपरवाईजर स्नेहलता पटेल ने समय से पहले ही न सिर्फ सर्वे काम पूरा कर दिया, बल्कि इसका डिजिटलाइजेशन काम भी पूरा कर दिया। प्रशासन ने इन्हें जबलपुर से कान्हा-बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व की हेलीकॉप्टर जॉय राइड का उपहार दिया है। वे बीते रोज हेलीकॉप्टर से जॉय राइड पर पहुंची थीं। उन्होंने हेलीपैड पहुंचकर हेलीकॉप्टर के साथ फोटो व हेलीकॉप्टर यात्रा के दौरान के फोटो-वीडियो उन्होंने सोशल मीडिया पर शेयर किए हैं।

सतना में बीएलओ को 'सरसी आईलैंड' को तोहफा- सतना जिले में बीएलओ प्रशासन प्रदीप कुमार को प्रशासन ने 'सरसी आईलैंड' घूमने का टूर पैकेज दिया था। प्रदीप ने मतदाता सूची के गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) अभियान के तहत 4 दिसंबर के काफी पहले ही अपने बूथ के सभी 477 मतदाताओं के विवरण की जांच, फॉर्म वितरण और उनके विधिवत संकलन की जिम्मेदारी डेडलाइन खत्म होने से पहले ही 100 प्रतिशत पूरी कर ली थी।

'लव जिहाद' जैसे शब्दों पर मौलाना महमूद मदनी ने जताई आपत्ति, सुप्रीम कोर्ट पर की विवादित टिप्पणी

जब-जब जुल्म होगा, तब-तब जिहाद होगा 'मुर्दा कौमें सरेंडर करती हैं'

भोपाल (एजेंसी)। भोपाल में जमीयत उलेमा-ए-हिंद की गवर्निंग बॉडी की बैठक में मौलाना महमूद मदनी ने कहा कि मौजूदा दौर में इस्लाम और मुसलमानों के खिलाफ नफरत फैलाने की कोशिशें बढ़ गई हैं। उन्होंने कहा कि 'जिहाद' जैसे मुकद्दस शब्द को आतंक और हिंसा से जोड़ना जानबूझकर किया जा रहा है।

मौलाना मदनी ने कहा-लव जिहाद, लैंड जिहाद, थूक जिहाद जैसे शब्द मुसलमानों को बदनाम करने के लिए गढ़े गए हैं। इस्लाम में

जेहाद का मतलब अन्याय और जुल्म के खिलाफ संघर्ष है। जब-जब जुल्म होगा, तब-तब जेहाद होगा। मुर्दा कौमें सरेंडर करती है।

उन्होंने आरोप लगाया कि मुसलमानों को लगातार टारगेट किया जा रहा है और उनके धार्मिक पहनावे, पहचान और जीवनशैली पर सवाल उठाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि मुसलमान इस देश के बराबर के नागरिक हैं, लेकिन शिक्षा, रोज़गार और सामाजिक बराबरी के अधिकार ज़मीनी स्तर पर कमज़ोर हो रहे हैं।

'संविधान की पाबंदी करे तभी सुप्रीम कोर्ट सच में सुप्रीम'

मौलाना मदनी ने न्यायपालिका पर भी सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि अदालतों को निष्पक्ष रहना चाहिए, लेकिन कुछ फैसलों से संदेह पैदा हुआ है। उन्होंने कहा कि सुप्रीम कोर्ट तभी सुप्रीम कहलाएगा, जब वह संविधान की पूरी तरह पाबंदी करेगा। उन्होंने दावा किया कि देश की बड़ी आबादी आज भी खामोश है। अगर यह तबका नफरत फैलाने वालों की ओर गया तो देश के लिए खतरा पैदा हो सकता है।

आईआरसीटीसी रेल कनेक्ट एप और वेबसाइट का सर्वर डाउन टिकट बुकिंग ठप ! लाखों यात्री परेशान

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईआरसीटीसी की वेबसाइट व एप IRCTC Rail Connect पिछले 96 घंटों यानी करीब चार दिनों से बंद पड़ी हुई है। सुबह से शाम तक हर कोशिश नाकाम साबित हो रही है। यूजर्स को बार-बार वही पुराना एरर मैसेज दिख रहा है। डाउनडिटेक्टर जैसी साइट्स पर चेक करने पर साफ दिख रहा है कि सर्वर का रिस्पॉन्स टाइम जीरो है मतलब कि सर्वर जवाब ही नहीं दे रहा।

शनिवार दोपहर 2 बजे से शुरू हुई तत्काल बुकिंग का समय भी बीत गया, लेकिन कोई टिकट नहीं बिकी।

सर्वर डाउन बता रहा

यह पीक सीजन है, जब लोग घर लौटने के लिए ट्रेन टिकट ढूंढ रहे हैं, लेकिन सर्वर डाउन होने से न तो तत्काल टिकट मिल रही है, न ही सामान्य बुकिंग हो पा रही। एक अनुमान के मुताबिक, इससे रोजाना करीब पांच से छह लाख यात्री प्रभावित हो रहे हैं। सोशल मीडिया पर #IRCTCDown ट्रेंड कर रहा है, जहां लोग गुस्से में लिख रहे हैं कि हर त्योहार पर यही ड्रामा।

गैंगरेप के आरोपी देवर और दोस्त को सजा

इंदौर। भाभी से गैंगरेप करने वाले देवर और उसके साथी को सत्र न्यायालय ने 20-20 वर्ष सश्रम कारावास की सजा सुनाई है। कोर्ट ने दुष्कर्मियों पर अर्थदंड भी लगाया। अतिरिक्त लोक अभियोजक जयंत दुबे ने बताया कि वारदात 24 दिसंबर 2022 की है। महिला बांबे अस्पताल क्षेत्र स्थित एक निजी स्कूल में काम करती थी। वारदात वाले दिन दोपहर करीब दो बजे वह घर जाने के लिए स्कूल से बाहर निकली तो दुष्कर्मी देवर ऑटो लेकर वहां आ गया। उसने महिला से कहा कि वह उसे घर छोड़ देगा। देवर की बात पर विश्वास कर वह ऑटो में बैठ गई, लेकिन वह उसे घर ले जाने के बजाय अन्य जगह ले गया। वहां पहले से एक और व्यक्ति मौजूद था। देवर और उस अन्य व्यक्ति ने वहां महिला से बारी-बारी से दुष्कर्म किया। दोनों ने महिला को धमकी भी दी थी कि यदि उसने यह बात किसी को बताई तो उसके बच्चे को जान से मार देंगे।

एसआईआर अभियान में सक्रियता बढ़ी

इंदौर। एसआईआर अभियान को गति देने के लिए सांसद शंकर लालवानी और विधायक महेंद्र हार्डिया बुधवार को वार्ड क्रमांक 49 के विभिन्न बूथों पर पहुंचे। तिलक नगर गली नंबर 10 स्थित बूथ क्रमांक 223 पर उन्होंने रहवासियों से संवाद किया और फॉर्म भरने के दौरान आने वाली चुनौतियों को समझा। कई रहवासियों ने बताया कि फॉर्म में आवश्यक 2003 की जानकारी प्राप्त करने में कठिनाई हो रही है। सांसद लालवानी ने कहा कि राष्ट्रहित से जुड़ा महत्वपूर्ण कार्य है, इसलिए सभी नागरिक निस्वार्थ भाव से इसमें सहयोग करें। उन्होंने परिवार सहित निर्धारित समय में फॉर्म भरने की अपील भी की। विधायक हार्डिया ने आश्वासन दिया कि 2003 की जानकारी उपलब्ध कराने के लिए झोन कार्यालय में कंप्यूटर ऑपरेटरों की अतिरिक्त सहायता दी जाएगी। अभियान में उत्कृष्ट कार्य करने पर बूथ क्रमांक 223 की बीएलओ रंजना जैन को 90त्न और मनीषा अग्रवाल को 60 प्रति. कार्य पूर्ण करने पर शाल-श्रीफल और पुष्पमाला पहनाकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में स्थानीय प्रतिनिधि और कार्यकर्ता भी उपस्थित रहे।

खजराना गणेश मंदिर में आज स्थापना वर्षगांठ

इंदौर। खजराना गणेश मंदिर में भगवान शुभ-लाभ की 19वीं स्थापना वर्षगांठ का उत्सव 30 नवंबर को धूमधाम से मनाया जाएगा। कार्यक्रमों की शुरुआत 29 नवंबर से पारंपरिक उबटन, विशेष श्रृंगार और आरती के साथ होगी। इस अवसर पर संस्था शुभ-लाभ गणेश्वरी परिवार द्वारा भगवान गणेश परिवार को भव्य विशेष पोशाक समर्पित की जाएगी। मंदिर परिसर में आकर्षक फूल बंगला और केले के पत्तों की सज्जा श्रद्धालुओं को दिव्य दर्शन कराएगी। संस्था के अध्यक्ष आशुतोष शर्मा और सचिव महेश शर्मा ने बताया कि वर्ष 2006 में स्थापित हुई यह अनूठी परंपरा अब लगातार 19 वर्षों से निभाई जा रही है। भगवान गणेश के सामने शुभ-लाभ की स्थापना देश में केवल रणथंभौर और खजराना में ही होती है। उत्सव के दौरान विशेष श्रृंगार, 56 भोग, उबटन और महाप्रसादी का आयोजन रहेगा। पिछले वर्षों में कई संत-महात्मा और जनप्रतिनिधि इन आयोजनों में शामिल होकर इसे गौरव प्रदान कर चुके हैं।

करंट लगने से इलेक्ट्रिशियन की मौत

इंदौर। चंदन नगर में निर्माणाधीन मकान में झिरी के दौरान इलेक्ट्रिशियन को करंट लग गया। इलाज के दौरान उसकी चोइथराम अस्पताल में मौत हो गई। घटना 23 नवंबर प्रतापनगर चोइथराम नेत्रालय के पास की है। समीर (19) पिता पवन सोलंकी निवासी अरिहंत नगर सिंहासा में सूरज नाम के व्यक्ति के घर पर मशीन से झिरी करने गया था। इस दौरान तार में कट लगे होने से उसे करंट लग गया और वह झुलस गया। परिवार के लोगों ने बताया कि समीर को ठेकेदार राजेश ठाकुर अपने साथ लेकर गया था। रिश्तेदारों के मुताबिक, समीर के पिता की एक माह पहले ही मौत हुई थी। 23 नवंबर को इसके लिए जागरण रखा गया था। दिन में बाजार करके समीर घर पहुंचा था। वह अपने बड़े भाई के साथ था। तभी ठेकेदार आया और कुछ देर का काम कर वापस आने की बात कही, लेकिन वहां हादसा हो गया। परिवार ने ठेकेदार और मकान मालिक पर आरोप लगाया है। पुलिस ने मर्ग कायम कर दिया।

चाइनीज मांझा बेचने और इस्तेमाल पर प्रतिबंध

इंदौर। मकर संक्रांति के मद्देनजर कलेक्टर शिवम वर्मा ने चाइनीज मांझे के उपयोग, बिक्री और भंडारण पर पूर्ण प्रतिबंध लागू कर दिया है। कलेक्टर ने स्पष्ट किया कि चाइनीज मांझा बेहद खतरनाक होता है, इससे राहगीरों, दोपहिया चालकों और बच्चों के घायल होने के कई मामले सामने आ चुके हैं। इसके अलावा यह पशुक्कपक्षियों के लिए भी गंभीर खतरा पैदा करता है, जो एक चिंताजनक स्थिति है। प्रशासन का कहना है कि किसी भी व्यक्ति द्वारा प्रतिबंध का उल्लंघन करने पर नियमानुसार सख्त कार्रवाई की जाएगी। कलेक्टर ने अधिकारी टीमों को उन क्षेत्रों पर विशेष नजर रखने के निर्देश दिए हैं, जहां पहले चाइनीज मांझे की बिक्री के मामले पाए गए हैं। गौरतलब है कि पिछले वर्षों में चाइनीज मांझे से कई दुर्घटनाएं हुई थीं, जिसके बाद इस बार त्योहार से पूर्व ही प्रशासन ने एहतियाती कदम उठाते हुए यह प्रतिबंध लागू किया है।

एक ही रात में 4 से ज्यादा दुकानों के ताले टूटे, बदमाश बेखौफ हुए

इंदौर। पुलिस की तमाम सख्ती के बाद भी बदमाश बेखौफ चोरी, मारपीट की वारदातों को अंजाम दे रहे हैं। दो दिन पहले बदमाशों ने द्वारकापुरी थाना क्षेत्र में एक ही रात में चार से ज्यादा दुकानों के ताले चटकाकर वहां से लाखों के माल पर हाथ साफ कर दिया। खास बात यह है कि घटना से कुछ ही घंटे पहले बुधवार रात पुलिस कमिश्नर संतोष सिंह ने खुद इलाके का दौरा कर गश्त बढ़ाने और बीट सिस्टम मजबूत करने के निर्देश दिए थे। इसके बावजूद गुरुवार सुबह 60 फीट रोड और अंकल गली में वारदातें हुई। व्यापारी सुबह दुकान खोलने पहुंचे तो ताले टूटे देखकर हैरान रह गए। जानकारी लगते ही व्यापारी थाने पहुंचे और मामले की शिकायत दर्ज कराई। फिलहाल पुलिस ने मेहर मेडिकल के संचालक की रिपोर्ट पर एफआईआर दर्ज की है, जबकि अन्य व्यापारियों से आवेदन लेकर कार्रवाई का आश्वासन दिया है। रात करीब डेढ़ बजे बदमाशों ने मेहर मेडिकल से 25 हजार रुपए नकद सहित अन्य सामान चुरा लिया। इसके अलावा न्यू निलेश कलेक्शन, हितेश कलेक्शन और श्रृंगार कलेक्शन के भी ताले चटका दिए गए। कुछ दुकानों में बदमाश सेंधमारी तो करने पहुंचे, लेकिन सेंट्रल लॉक तोड़ने में नाकाम रहे। व्यापारी नितेश बुधवानी और आशीष सहित कई दुकानदारों ने बताया कि बदमाशों ने ताले तोड़ने की कोशिश की। कुछ दुकानें बच गई, लेकिन कई को नुकसान हुआ है।

शुक्ला ब्रदर्स की बस से हादसा, चार घायल, लोगों ने बस में तोड़फोड़ की

चालक-परिचालक को पीटा, ओवरटेक करते समय हादसा हुआ

इंदौर। शुक्ला ब्रदर्स की बसें सड़क पर मौत बनकर दौड़ रही है। दो माह पहले भी बस ने सांवेर में चार लोगों को रौंद दिया था। इसके बाद भी बसों पर कार्रवाई नहीं हो पाई। शुक्रवार को फिर तेज गति से आ रही बस ने ओवरटेक करते हुए दोपहिया वाहन से जा रहे चार लोगों को टक्कर मारकर घायल कर दिया। हादसे के बाद आक्रोशित लोगों ने बस में तोड़फोड़ कर चालक और परिचालक को जमकर पीट दिया। सांवेर पुलिस के अनुसार, शुक्ला ब्रदर्स की यह बस, जो भाजपा विधायक गोलू शुक्ला की बाणेश्वरी ट्रेवल्स के नाम से चलती है। हादसे में एक बाइक पर सवार महिला, पुरुष और बच्चा गंभीर रूप से घायल हो गए, जबकि दूसरी बाइक का युवक भी बुरी तरह जख्मी हुआ।

घटना सांवेर तहसील के ग्राम बड़ोदिया ऐमा में शाम 4 बजे हुई। बस क्रमांक एमपी-09-एफए-9720 इंदौर से उज्जैन जा रही थी। घटना स्थल के पास वह आगे जा रही आयशर को ओवरटेक करने लगी, इसी दौरान बस अनियंत्रित होकर पीछे से दो पहिया वाहन में घुस गई। हादसे में शिवांग यादव (19), उसका भाई सारांश(13) दोनों निवासी ड्रीम सिटी सांवेर, आजम खान (50) तथा उनकी पत्नी कलाबाई (48) निवासी कलाबाई घायल हो गए। शिवांग अपने भाई के साथ इंदौर में रिश्तेदार से मिलकर वापस लौट रहा था। जबकि, आजम खान उज्जैन जा रहे थे। घटना के बाद तत्काल राहगीरों ने घायलों को अरविंदो अस्पताल भिजवाया और पुलिस को सूचना दी। उधर, घटना को अंजाम देने के बाद चालक कूदकर भागने लगा तो राहगीरों ने उसे खेत में पकड़ा और जमकर पिटाई की। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर बस को जब्त कर चालक पर लापरवाही का केस दर्ज कर लिया है। बता दें, इंदौर में भी शुक्ला ब्रदर्स की बसों से कई बार हादसे हो चुके हैं, लेकिन पुलिस सख्ती से कार्रवाई नहीं कर पाती, इसके चलते चालक मनमाने ढंग से बसों का संचालन करते हैं।

इंदौर। शहर में सुगम सुरक्षित व सुखद यातायात के लिए पुलिस द्वारा लगातार यातायात प्रबंधन का कार्य एवं नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहन चालकों के विरुद्ध चालानी कार्रवाई की जा रही है। इसी अनुक्रम में 28 नवंबर की सुबह से 29 नवंबर की सुबह तक नो एंट्री में भारी वाहनों को लाने वाले वाहन चालकों के विरुद्ध, इंदौर पुलिस द्वारा कार्यवाही करते हुए 11 वाहनों के विरुद्ध चालानी कार्यवाही कर 55 हजार रुपये का समन शुल्क वसूल कर शासन के खाते में जमा कराया । साथ ही उन्हें हिदायत भी दी गई कि प्रशासन द्वारा दिए गए दिशा निर्देशों का पालन करें।

खेत पर बने मकान से 30 करोड़ रु. की एमडी ड्रग्स मिली, 3 आरोपी पकड़ाए

इंदौर-नीमच नारकोटिक्स की संयुक्त कार्रवाई में मिनी लैब मिली

इंदौर। इंदौर और नीमच नारकोटिक्स विभाग की संयुक्त टीम ने बड़ी कार्रवाई करते हुए ग्राम गढ़ी,थाना बना (जिला नीमच) स्थित एक खेत पर बने मकान पर छापा मारा। मिली पुख्ता सूचना के आधार पर की गई इस कार्रवाई में टीम ने मौके से दो किलो से अधिक एमडी ड्रग्स और भारी मात्रा में ड्रग बनाने का केमिकल एवं उपकरण जब्त किए। अंतरराष्ट्रीय बाजार में जब्त माल की कीमत करीब 30 करोड़ रुपये बताई जा रही है। नारकोटिक्स डीआईजी महेश चंद्र जैन ने बताया कि छापेमारी के दौरान निरंजन और उसके दो साथियों को गिरफ्तार किया गया। ये आरोपी गुप्त रूप से खेत के मकान को मिनी लैब की तरह इस्तेमाल कर एमडी ड्रग्स तैयार कर रहे थे। टीम को मौके से कई प्रकार के रसायन, मशीनरी और तैयार ड्रग्स के पैकेट भी बरामद हुए। डीआईजी ने बताया कि आरोपियों से पूछताछ जारी है और यह पता लगाने की कोशिश की जा रही है कि तैयार माल किस नेटवर्क को सप्लाई किया जाना था।

टीम यह भी जांच कर रही है कि ड्रग निर्माण के लिए केमिकल कहां से लाए जा रहे थे और इस गिरोह में और कौन-कौन शामिल हो सकता है। नारकोटिक्स विभाग का मानना है कि गिरोह लंबे समय से इस इलाके में सक्रिय था। कार्रवाई के बाद टीम ने लैब को सील कर दिया है और जब्त किए गए सभी सामान की फॉरेंसिक जांच कराई जाएगी। अधिकारियों का दावा है कि यह पिछले महीनों में नीमच-मालवा क्षेत्र में की गई सबसे बड़ी ड्रग बरामदगी में से एक है।

जब्त की गई सामग्री

- 2.7 किलो ठोस एमडी ड्रग्स
- 16 किलो लिक्विड एमडी
- 70 किलो से अधिक केमिकल और ड्रग्स बनाने का सामान
- 3 बाइक और 3 मोबाइल फोन

अंतरराष्ट्रीय बाजार कीमत इसकी कीमत 30 करोड़ से अधिक आंकी गई है।

भारी मात्रा में रॉ मटेरियल जब्त

सूचना के बाद नारकोटिक्स विंग और नीमच-इंदौर पुलिस की संयुक्त टीम ने खेत में बने मकान पर दबिश दी, जहां एमडी ड्रग्स का अवैध निर्माण चल रहा था। मौके से तैयार ड्रग्स, लिक्विड और भारी मात्रा में रॉ मटेरियल बरामद किया गया। पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज कर लिया है। अब एमडी तस्करी के पूरे नेटवर्क और इसके सप्लाई रूट की जांच की जा रही है।

'डिजिटल गिरफ्त' में 73% लोग फंसे, बच्चों के मानसिक विकास पर असर

लगातार स्क्रीन उपयोग से 80% लोगों में अवसाद की शिकायत

इंदौर। एमजीएम मेडिकल कॉलेज के मनोरोग विभाग द्वारा किए गए एक विस्तृत अध्ययन ने मोबाइल की बढ़ती लत पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए। 500 लोगों पर किए गए इस शोध में 73 प्रतिशत लोग मोबाइल की डिजिटल डिपेंडेंसी के शिकार पाए गए। विशेषज्ञों का कहना है कि अब मोबाइल सिर्फ सुविधा का साधन नहीं रहा, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाने वाला बड़ा खतरा बनते जा रहा है। अध्ययन में यह चौंकाने वाला तथ्य सामने आया कि लोग प्रतिदिन औसतन 7 घंटे मोबाइल स्क्रीन पर बिताते हैं। इसका हिसाब लगाया जाए तो साल में करीब 1800 घंटे, यानी पूरे 75 दिन केवल मोबाइल पर ही निकाल दिए जाते हैं। लगातार स्क्रीन उपयोग के कारण 80 प्रतिशत लोगों में हल्का लेकिन लगातार रहने वाला अवसाद देखा गया है, जिसे विशेषज्ञ साइलेंट डिप्रेशन बता रहे हैं। यह शोध मनोरोग विशेषज्ञ डॉ. कौष्तुभ बागुल द्वारा किया गया।

नोमोफोबिया की बढ़ती समस्या- अध्ययन में पाया गया कि मोबाइल न मिलने या नेटवर्क न होने पर लोग घबराहट, बेचैनी और तनाव महसूस करने लगते हैं। कई लोगों में रातभर जागने, बार-बार फोन चेक करने, नींद टूटने, चिड़चिड़ापन और ध्यान कमजोर होने जैसे लक्षण सामने आए हैं। लगातार नोटिफिकेशन और स्क्रीन की रोशनी दिमाग को आराम नहीं करने देती, जिससे मानसिक थकान और अवसाद बढ़ता है।

बच्चों का दिमागी विकास प्रभावित- अध्ययन के अनुसार 10 से 14 वर्ष के बच्चे मोबाइल की अत्यधिक लत के कारण सबसे अधिक प्रभावित हो रहे हैं। इस उम्र में दिमागी विकास तेजी से होता है, लेकिन अत्यधिक स्क्रीन टाइम से यह प्रक्रिया धीमी पड़ रही है। बच्चों में आत्मविश्वास में कमी, सामाजिक दूरी, अवसाद और गर्दनक्करीढ़ की समस्याएं तेजी से बढ़ रही हैं। विशेषज्ञों ने स्कूलों में स्क्रीन टाइम नियंत्रण के लिए एक मॉडल बनाने की आवश्यकता जताई है। विशेषज्ञों का कहना है कि समय रहते नियंत्रण न किया गया तो आने वाले वर्षों में मानसिक स्वास्थ्य संकट और गहरा हो सकता है।

ऐसे कम करें मोबाइल की लत - मोबाइल उपयोग का निश्चित समय तय करें, अनावश्यक ऐप के नोटिफिकेशन बंद करें, सोशल मीडिया का उपयोग दिन में 2-3 बार तक सीमित रखें, रात में मोबाइल को बिस्तर से दूर रखें, भोजन, अध्ययन और पारिवारिक समय में मोबाइल से दूरी रखें, खाली समय में किताब पढ़ें, वॉक करें या संगीत सुनें। घर में फोन पार्किंग ज़ोन बनाएं।

विश्व एड्स दिवस पर जागरूकता रैली

इंदौर। राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण कार्यक्रम के तहत जिला स्वास्थ्य विभाग 1 दिसंबर को विश्व एड्स दिवस पर सुबह 8 बजे राजबाड़ा से गांधी हाल तक विशाल जन-जागरूकता रैली निकालेगा। रैली में स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी-कर्मचारी, रेड रिबन क्लब सदस्य, नर्सिंग स्टूडेंट्स सहित करीब 1000 प्रतिभागी शामिल होंगे। सहभागी एड्स से जुड़े संदेशों वाली तख्तियां, पोस्टर-बैनर लेकर लोगों को जागरूक करेंगे और बैटरी माइक के माध्यम से महत्वपूर्ण जानकारी देंगे। सीएमएचओ डॉ माधव हसानी ने बताया कि डॉ. शैलेन्द्र जैन के निर्देशन में 1 से 7 दिसंबर तक एड्स जागरूकता सप्ताह भी मनाया जाएगा। इस वर्ष जनवरी से अक्टूबर तक जिले में 70 हजार से अधिक पुरुषों और गर्भवती महिलाओं की जांच की गई है।

दहेज़ में कार के लिए महिला को प्रताड़ना दी, सुसाइड कर लिया

सुसाइड केस में पति-सास और ससुर पर मामला दर्ज

इंदौर। महिला से दहेज में ससुराल वालों ने कार मांगी। जब महिला ने मायके से कार लाने में असमर्थता जताई तो ससुराल वाले प्रताड़ित करने लगे। प्रताड़ना से तंग आकर महिला ने फांसी लगा ली थी। जांच के बाद पुलिस ने सुसाइड केस में पति, सास और ससुर पर केस दर्ज कर लिया है। घटना एरोड्रम थाना क्षेत्र अंतर्गत लक्ष्मणपुरा की है। पुलिस के अनुसार, 21 नवंबर को पूजा ने आत्महत्या की थी। उसके चाचा संजीव यादव और भाई ने अश्मेध ने अपने बयानों में बताया था कि पूजा का पति और सास-ससुर उसे दहेज में कार लाने के लिए परेशान कर रहे थे। घटना के बाद से पुलिस ने पूजा के परिजनों के बयान दर्ज किए हैं। इसमें ससुराल पक्ष पर कार देने के लिए दबाव बनाने के आरोप लगे हैं। जांच पूरी होने पर पुलिस ने पूजा के पति हर्ष, पिता वीरेंद्र और सास बिट्टी यादव के खिलाफ शुक्रवार को प्रकरण पंजीबद्ध किया है। मामले में पति की गिरफ्तारी हो गई है, जबकि सास-ससुर फरार है।

आपस में बहस हुई

पूजा के सुसाइड के बाद पति ने बताया था कि घटना की रात में दोनों कमरे पर ही थे। उनके बीच बातें चल रही थी। इस दौरान एक बात को लेकर बहस हो गई। तब वह कमरे से बाहर निकल गया। करीब एक घंटे बाद वापस आया तो पूजा फंदे पर लटकी थी।

निगम टीम और भाजपा नेता के रिश्तेदार में विवाद, मामला दर्ज

आरोपी क्षेत्र क्रमांक-3 के पूर्व भाजपा विधायक के रिश्तेदार

इंदौर। हीरानगर क्षेत्र में गुरुवार दोपहर नगर निगम की टीम पर युवक द्वारा हमला किए जाने का मामला सामने आया। आरोपी की पहचान रमेश शर्मा के रूप में हुई है, जो कथित तौर पर क्षेत्र क्रमांक-3 के पूर्व भाजपा विधायक के रिश्तेदार बताए जा रहे हैं। निगम अधिकारियों की शिकायत के बाद पुलिस ने उनके खिलाफ मारपीट और शासकीय कार्य में बाधा डालने की धाराओं में मामला दर्ज कर लिया है। सुखलिया के मकान सीएच-66 के पास नर्मदा लाइन बिछाने के लिए नगर निगम की टीम खुदाई कार्य कर रही थी। इस दौरान सुपरवाइजर अंकित शर्मा और उपयंत्री पलाश पंडित निरीक्षण के लिए मौके पर मौजूद थे। अचानक पहुंचे रमेश शर्मा ने पहले उपयंत्री पलाश पंडित से बहस बाजी की और उन्हें अपशब्द कहे।

सुपरवाइजर अंकित ने बीच बचाव की कोशिश की तो रमेश शर्मा ने उनके साथ भी मारपीट की। बचाव के लिए आए उपयंत्री पलाश पंडित और ठेकेदार कंपनी के सुपरवाइजर अनिल चौहान से भी आरोपी ने धक्का मुक्की और मारपीट की। घटना की जानकारी पुलिस को दी गई। इसके बाद पुलिस ने सुपरवाइजर अंकित की शिकायत पर रमेश के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। उपयंत्री ने बताया कि नर्मदा पाइप लाइन डालने का कार्य आदिनाथ इंटरप्राइजेज को दिया गया है और उसी निरीक्षण के दौरान यह घटना हुई। पुलिस अब पूरे मामले की जांच कर रही है और आरोपी के राजनीतिक संबंधों की भी पुष्टि कर रही है।

हत्या का कैदी एमवाय अस्पताल से भागा, दो साल पहले की वारदात

अस्पताल में चल रहे निर्माण कार्य के मचान से फरार हुआ

इंदौर। एमवाय अस्पताल से शुक्रवार सुबह एक बड़ा मामला सामने आया, जहां इलाज के लिए भर्ती किया गया कैदी चौथी मंजिल से फरार हो गया। अस्पताल में चल रहे निर्माण कार्य के दौरान लगाई गई मचान इस फरारी का जरिया बनी। जब ड्यूटी पर तैनात जेल गार्ड कैदी को उसके बेड पर नहीं देख पाया तो तुरंत अधिकारियों और पुलिस को सूचना दी गई। फिलहाल संयोगितागंज पुलिस उसकी तलाश में जुटी हुई है। वह सेंट्रल जेल से पेट के इलाज के लिए बुधवार से अस्पताल में भर्ती था। फरार कैदी की पहचान विशाल पिता खरदे निवासी कुलकर्णी का भट्टा, के रूप में हुई है। बीमार होने के चलते उसे सेंट्रल जेल से एमवाय अस्पताल के 23 नंबर वार्ड में भर्ती कराया गया था। बताया जा रहा है कि सुबह जेल गार्ड किसी काम से बाहर गया। इसी दौरान विशाल वार्ड से निकलकर बालकनी तक पहुंचा और मचान से उतरकर भाग निकला। पुलिस के अनुसार, विशाल 2023 में बाणगंगा इलाके में अपने साथियों के साथ युवक की हत्या के मामले में जेल में बंद था। उसकी फरारी की जानकारी मिलते ही परदेशीपुरा और बाणगंगा थानों को भी सतर्क कर दिया गया है।

पहले भी हो चुकी हत्या- परदेशीपुरा पुलिस के मुताबिक, विशाल वर्ष 2020 में अपनी प्रेमिका अर्चना डाबर की हत्या के मामले में भी आरोपी रह चुका है। 6 मई 2020 को अर्चना की बेरहमी से गला घोंटकर हत्या कर दी गई थी। इस वारदात में विशाल के साथ उसके दोस्त सत्यनारायण सोलंकी और शिव नंदन राठौर भी शामिल थे। अर्चना और विशाल के बीच दोस्ती थी, लेकिन विवादों के चलते संबंध बिगड़ गए।

घटना वाले दिन अर्चना ने कई बार विशाल को कॉल किया, जिसके बाद उसने उसे कुलकर्णी भट्टे पर मिलने बुलाया और वहीं अपने साथियों की मदद से उसकी हत्या कर दी। शव को पास के चैंबर में फेंककर उस पर मिट्टी और नमक डाल दिया गया था। जनवरी 2021 में सड़ा-गला शव मिलने के बाद पुलिस ने मामले का खुलासा किया। फिलहाल पुलिस फरार कैदी विशाल की तलाश में अलग-अलग इलाकों में दबिश दे रही है। मामला जेल सुरक्षा और अस्पताल प्रबंधन की बड़ी लापरवाही को भी उजागर करता है।

प्रेम प्रसंग में लापता युवक ने दोस्त के घर फांसी लगा ली

प्रेमिका के परिवार को आपत्ति, कई दिनों से तनाव में था

इंदौर। तीन दिन से लापता इलेक्टीशयन युवक ने अपने दोस्त के घर फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। आत्महत्या के पीछे प्रेम प्रसंग के चलते तनाव में रहने की आशंका जताई जा रही है। रात में दोस्त ने युवक के भाई को फोन कर सारी घटना बताई। इसके बाद परिजन उसका शव लेने पहुंचे। एमआईजी पुलिस के मुताबिक मृतक की पहचान आयुष राजपूत (24) निवासी मयूर नगर आजाद नगर के रूप में हुई है। आयुष का दोस्त राज अनोप टॉकीज के पीछे नादिया नगर में रहता है और घटना उसके ही कमरे की है। मृतक के भाई आदर्श के अनुसार, आयुष 3 दिन से घर नहीं आया था। उसका मोबाइल भी बंद आ रहा था। संदेह होने पर आदर्श ने दोस्त राज को संपर्क किया। राज ने कमरे पर जाकर देखा, लेकिन दरवाजा अंदर से बंद था। लॉक तोड़ने पर आयुष फंदे से लटका मिला। इसके बाद पुलिस को सूचना दी गई। आदर्श ने बताया कि वह हरदा जिले के खिरकिया के रहने वाले हैं और वहां की युवती से आयुष का प्रेम प्रसंग था, लेकिन लड़की के परिजनों को इस रिश्ते से आपत्ति थी। परिजनों ने आशंका जताई है कि यही मानसिक तनाव आत्महत्या की वजह हो सकता है। एमआईजी पुलिस ने मामले में मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है।

सुसाइड नोट नहीं मिला- पुलिस के मुताबिक घटनास्थल से कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है। मृतक के भाई और बहन के बयान लिए जाएंगे। वहीं प्रेम प्रसंग संबंधित पहलुओं की भी जांच की जाएगी। पुलिस का कहना है कि पोस्टमार्टम की रिपोर्ट आने के बाद आगे की कार्रवाई होगी। आदर्श ने बताया कि माता-पिता नहीं हैं। परिवार में सिर्फ भाई-बहन हैं।

पुस्तक समीक्षा

नृपेन्द्र अभिषेक नृप
समीक्षक

पावन तट पर-आस्था, मानवता और विवेक का उजला संग

संपादक सुरेश सौरभ हिंदी साहित्य जगत में एक प्रतिष्ठित और बहुआयामी रचनाकार के रूप में जाने जाते हैं। उनकी भाषा में गहन संवेदना है, तो विचारों में सामाजिक यथार्थ का तीक्ष्ण दृष्टिकोण। वे उन साहित्यकारों में से हैं जिनके लेखन में न केवल कलात्मकता बल्कि मानवता की सच्ची पुकार सुनाई देती है। एक शिक्षक के रूप में वे नई पीढ़ी को साहित्यिक चेतना से जोड़ने का कार्य कर रहे हैं, तो एक कथाकार के रूप में वे समाज की विडंबनाओं को शब्दों के माध्यम से उजागर कर रहे हैं। 'पावन तट पर' का संपादन उनके इसी संवेदनशील और सजग साहित्यकार रूप का प्रमाण है। इस साझा लघुकथा-संग्रह में उन्होंने विभिन्न दृष्टिकोणों से कुंभ जैसे विशाल सांस्कृतिक आयोजन को देखने की एक ईमानदार और बहुआयामी कोशिश की है।

यह संग्रह केवल कुंभ मेले का साहित्यिक दस्तावेज नहीं, बल्कि यह भारतीय जनमानस की आस्था, विश्वास, विरोधाभास और विवेक का प्रत्यक्ष चित्रण है। कुंभ, जो सदियों से हमारी आध्यात्मिक चेतना का प्रतीक रहा है, जहाँ लाखों-करोड़ों लोग पुण्य स्नान के लिए एकत्र होते हैं, वहाँ मानवता की असंख्य कहानियाँ भी जन्म लेती हैं- कुछ श्रद्धा से भरी, कुछ पीड़ा से सराबोर, कुछ प्रश्नों से दग्ध। 'पावन तट पर' इन सबको अपने भीतर समेटे हुए है।

संपादक सुरेश सौरभ ने इस संग्रह के माध्यम से केवल धार्मिक आस्था का उत्सव प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि उन्होंने उन सामाजिक सच्चाइयों को भी स्वर दिया है, जिन्हें अक्सर धार्मिक आवरण के नीचे दबा दिया जाता है। वे इस बात को भली-भांति समझते हैं कि आस्था और अंधविश्वास के बीच एक बेहद महीन रेखा है, और इसी रेखा पर यह संकलन चलता है, कभी श्रद्धा की उजली रोशनी में, तो कभी पाखंड की काली छाया में।

इस संग्रह की विशेषता यह है कि इसमें सम्मिलित प्रत्येक लघुकथा अपने आप में एक अलग दृष्टि, एक अलग संवेदना और एक अलग समाज-सत्य को उद्घाटित करती है। डॉ. रशीद गौरी की 'निपटारा' में हम देखते हैं कि कैसे आधुनिक समाज में कुछ लोग आपदा में भी अवसर तलाश लेते हैं। कुंभ जैसे पवित्र अवसर को भी स्वार्थ और छल का माध्यम बना देना, यह रचना हमें भीतर तक झकझोर देती है। वहीं सूर्यदीप कुशवाहा की 'पुण्य फल' में मानवीय करुणा का उज्ज्वल उदाहरण मिलता है। रचना यह संदेश देती है कि सच्चा पुण्य किसी तीर्थ या स्नान में नहीं, बल्कि मनुष्य की सहायता में निहित है।

डॉ. पूरन सिंह की 'ये माँ ही हो सकती है' पाठक को भावनाओं के ऐसे संसार में ले जाती है, जहाँ मातृत्व की ममता धर्म, दूरी, और वृद्धावस्था के हर बंधन को तोड़ देती है। वृद्धाश्रम की दीवारों के भीतर भी आस्था का दीप जलता है, जो इस लघुकथा को अनमोल बनाता है। डॉ. अंजू दुआ जैमिनी की 'मोक्ष बनाम मुक्ति' आधुनिकता और परंपरा के टकराव पर एक साहसिक प्रश्न उठाती है कि क्या केवल स्नान से मुक्ति संभव है, जब जल ही रोग का कारण बन जाए? यह लघुकथा धार्मिक अनुष्ठानों के प्रति प्रश्नाकुल दृष्टि प्रस्तुत करती है। वहीं मनोरमा पंत की 'मुक्ति की खुशी' में कुंभ की भीड़ में उमड़ती श्रद्धा की सहजता और नादान हृदय की मासूमता का चित्रण है, जो दिखाता है कि आस्था आज भी भारतीय मन में गहराई से रची-बसी है।

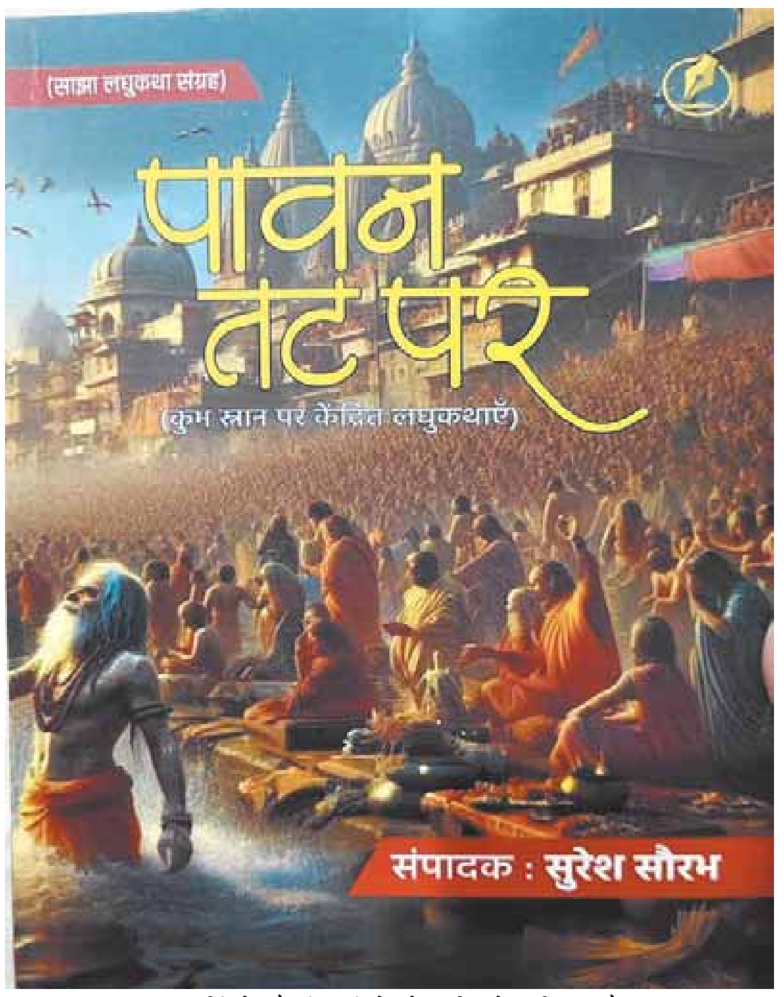

रमाकांत चौधरी की 'पूर्व जन्म के पाप' एक मार्मिक लघुकथा है, उन ठगों पर जो श्रद्धा का शोषण कर धर्म की गरिमा को कलंकित करते हैं। यह रचना धर्म के बाजारीकरण पर करारा प्रहार करती है। इसी क्रम में गुलज़ार हुसैन, सेवा सदन प्रसाद, चित्रगुप्त, अरविंद असर आदि लघुकथाकारों ने भी समाज में फैली कुरीतियों और विसंगतियों को गहरी संवेदनशीलता और विचारशीलता से उजागर किया है। इन सभी रचनाओं के बीच 'पावन तट पर' एक ध्रुव तारे की भांति चमकता है, जो आस्था और विवेक, परंपरा और आधुनिकता, भावना और तर्क, सभी के बीच संतुलन साधता है। इस संग्रह की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह किसी धर्म या विचारधारा का पक्ष नहीं लेता, बल्कि मानवता के पक्ष में खड़ा होता है। यही इसे कालजयी बनाता है।

सुरेश सौरभ की भूमिका में व्यक्त विचार संग्रह की आत्मा हैं। उन्होंने स्पष्ट कहा है कि साहित्यकार का कार्य किसी विशेष पंथ, जाति या विचारधारा का प्रचार करना नहीं, बल्कि सत्य और मानवता की खोज करना है। उन्होंने यह भी स्वीकार किया है कि दरबारी लेखकों और एजेंडा-चालित रचनाकारों के बीच सच्चे साहित्यकार का दायित्व और भी बढ़ जाता है। सौरभ जी इस बात पर बल देते हैं कि साहित्य वही शाश्वत होता है जो निष्पक्ष, मानवीय और जन-सरोकारों से जुड़ा हो। उनका यह कथन अत्यंत सार्थक है कि 'आस्था और अंधविश्वास में एक महीन रेखा है, जिसे समझना और परखना आवश्यक है।' यही बात इस संग्रह को विचारशील बनाती है। 'पावन तट पर' न केवल कुंभ के दृश्यात्मक संसार को उकेरता है, बल्कि वह यह भी पूछता है कि क्या हमारी आस्था मानवता को सशक्त बना रही है या उसे अंधकार की ओर धकेल रही है।

यह संग्रह पाठक को बार-बार सोचने पर मजबूर करता है, कुंभ का मेला केवल आस्था का प्रतीक है या यह हमारे समाज की व्यवस्था का आईना भी है? भीड़ में उमड़ती संवेदनाएँ, भक्ति में लिपटा व्यवसाय, स्नान में छिपा स्वार्थ और त्याग- इन सबका सम्मिलित चित्र यह पुस्तक अत्यंत सजीवता से प्रस्तुत करती है। संपादक के रूप में सुरेश सौरभ ने रचनाकारों का चयन अत्यंत सजग दृष्टि से किया है। उन्होंने अनुभवी लेखकों के साथ-साथ नवोदित प्रतिभाओं को भी समान मंच दिया है। यह उनकी लोकतांत्रिक संपादकीय दृष्टि का परिचायक है। उन्होंने केवल कथाओं को संकलित नहीं किया, बल्कि उन्हें एक वैचारिक सूत्र में पिरोया है, जिससे पूरी पुस्तक एक संपूर्ण दार्शनिक विमर्श का रूप ले लेती है।

भाषा की दृष्टि से भी यह संग्रह उल्लेखनीय है। प्रत्येक लघुकथा में एक विशिष्ट शैली, एक अलग लय, और एक सजीव चित्रात्मकता दिखाई देती है। कहीं आस्था का पवित्र जल बहता है, तो कहीं समाज के मलिन जल की गंध आती है। किंतु हर रचना का अंत पाठक के मन में कोई न कोई सवाल, कोई चुभन या कोई आलोक छोड़ जाता है। यही एक सफल लघुकथा-संग्रह की पहचान है। 'पावन तट पर' का महत्व केवल धार्मिक या सामाजिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और साहित्यिक दोनों है। यह पुस्तक बताती है कि भारतीय आस्था केवल अनुष्ठानों में नहीं, बल्कि मानवीय संबंधों की पवित्रता में निहित है। यह संग्रह पाठक को एक ऐसी यात्रा पर ले जाता है जहाँ स्नान केवल जल में नहीं, बल्कि आत्मा के भीतर होता है, मलिनताओं से मुक्ति का और विवेक की ओर अग्रसर होने का।

इस तरह से यह कहा जा सकता है कि 'पावन तट पर' एक ऐसा साहित्यिक संकलन है जो अपने समय का साक्षी भी है और समाज का दर्पण भी। यह न केवल पढ़ने योग्य, बल्कि संभालकर रखने योग्य पुस्तक है-यह एक दस्तावेज, जो आने वाले समय में भी यह बताएगा कि साहित्यकार केवल शब्दों का जादूगर नहीं होता, वह युग का मूक इतिहासकार होता है। सुरेश सौरभ और सभी रचनाकारों को इस उत्कृष्ट साहित्यिक प्रयास के लिए साधुवाद। यह संग्रह न केवल कुंभ मेले की कथा कहता है, बल्कि मानवता के कुंभ की भी व्याख्या करता है, जहाँ हर मन, हर विश्वास, हर संवेदना एक साथ स्नान करती है सत्य और करुणा के पावन जल में।

पुस्तक- पावन तट पर
संपादक - सुरेश सौरभ
प्रकाशन- समृद्ध पब्लिकेशन, दिल्ली
मूल्य- 250 रुपये

कविता

उम्र

श्रीति राशिनकर

उम्र ना थकती है ना रूकती है
उम्र गतिमान होती है
उम्र अपने साथ लेकर चलती है
यादों का पिटारा
उम्र के साथ होते है
अपने - पराए
कभी कभी उम्र
परायों को भी
अपना बना लेती है !
उम्र
अपना हिसाब रखती है
उसे जरूरत नहीं होती
किसी कैलकुलेटर की
वह स्वयं ही
लेती देती है हिसाब
कभी भूल चुक लेनी देनी नहीं होती उससे
उम्र के साथी तो
बहुत होते है
लेकिन वह किसी का साथ नहीं देती
सब कुछ होकर भी
वह अकेली चलती है एकला चालो की तर्ज पर !
उम्र परेशान नहीं होती
किसी को दुखी देखकर
ना ही खुश होती है वह
किसी को खुश देख
किस पड़ाव पर रुकना है
वह अच्छी तरह जानती है
लेकिन पड़ाव नहीं जानता
उसका और उम्र का
कितना लंबा रिश्ता है।

प्रेम, रिश्ते नातों में जुड़ाव का युग

दृष्टिकोण

सपना सी.पी. साहू 'स्वप्निल'

जब दुनिया फ़ोन, मोबाइल, इंटरनेट और अन्य त्वरित स्पंदन के माध्यम से मुक्त थी, तब जीवन की धीमी गति भी सामुदायिक और प्रकृति की लय से सजी थी। तकनीकी अनुपस्थिति तो थी पर मानवीय संबंधों में अनूठी गहराई थी। जीवनशैली सरल, संवाद में अपनत्व और ज्ञानार्जन के तरीके सरल, अनुभवी लेकिन प्रायोगिक हुआ करते थे।

इस संचार युग में उस युग की जीवनशैली में धैर्य तो था लेकिन आपसी जुड़ाव सर्वोपरि था। बच्चों का बचपन छोटी सी स्क्रीनों के बजाय विशाल मैदानों में मौज-मस्ती करता था, सामूहिक खेलों और दादी, नानी की कहानियों की कल्पनाशीलता में बीतता था, जिससे उनका शारीरिक, मानसिक और रचनात्मक विकास सुदृढ़ होता था। वहीं युवावस्था में समाजिकरण व्यक्तिगत मेल मिलाप और स्थानीय गोष्ठियों पर केंद्रित था। आजीविका की धीमी रफ्तार से लोगों को कलाओं और शिल्पों में अलग ही जुड़ाव का समय मिलता था। उस युग में बुजुर्ग परिवार और समाज के केंद्र बिंदु थे, जिनके अनुभव, ज्ञान का महत्व समझा जाता था और उन बड़ों के पास पोते-पोतियों तथा पड़ोसियों के लिए भरपूर समय था।

उस समय हर बच्चे, बुढ़े और जवान कोई भी संवादविहिन नहीं थे, आज रूप बदला है संवाद भी स्क्रीन की दुनिया में सिमट गया है। पहले दूरस्थ संवाद मुख्य रूप से डाक सेवा पर निर्भर था। पत्र संवाद का सबसे प्रमुख माध्यम थे, चाहे वह विलंब से पहुंचते थे पर वे संदेश अत्यधिक विचारपूर्ण, विस्तृत और भावनाओं से जुड़े होते थे। प्रियजन की हस्तलिपि का तक मोल था, जिसमें उनकी छुअन महसूस कर ली जाती थी और प्रत्युत्तर पाने की प्रतीक्षा रहती थी, डाक सेवा वालों तक से वार्तालाप होता था कि 'क्या मेरा कोई संदेश है?' रिश्तें नातों के भावनात्मक मूल्य तो थे साथ ही सामाजिक पक्ष भी आपस में जुड़ता था जो आज की त्वरित मैसेजिंग में लगभग असंभव है। आपातकाल के लिए टेलीग्राम और लंबी दूरी की सीमित बातचीत के लिए सार्वजनिक बूथों (एसटीडी, पीसीओ, एसटीडी) पर जाते थे, चाहे वह सेवा महंगी थी पर वह कुछ क्षण का वार्तालाप महिनों तक मनन में रहता था। इस समय इंटरनेट से जो ज्ञानार्जन होता है उसके लिए पुस्तकालयों और मुद्रित पुस्तकों पर जन-जन निर्भर थे, जिससे वे विषय को गहनता और अनुशासन से पढ़ते थे। उस समय के शिक्षक ज्ञान के संरक्षक थे और हर प्रश्न के लिए छात्र उन पर ही निर्भर रहते थे, जिससे गुरु शिष्य संबंध मजबूत होते थे। अनौपचारिक ज्ञान समाचार पत्र-पत्रिकाओं, सामुदायिक चौपालों और रेडियो के माध्यम से फैलता था। उस युग की यादें विस्तृत है।

तब, तात्कालिकता की कमी थी, लेकिन जीवन में धैर्य, सामुदायिक एकता और आपसी निर्भरता वृहद थी। सूचना भले ही धीमी गति से यात्रा थी, पर उसका मूल्य और प्रामाणिकता अधिक थी। वह ऐसा समय था जहां लोग भौगोलिक दूरी की परवाह न करते हुए भी, एक-दूसरे से अधिक गहराई से जुड़े हुए थे, भले ही अब, संवाद आसान है पर वर्तमान में वह भावनात्मक जुड़ाव दुर्लभ है।

कविता

जीत गई है क्रांति

मुकेश कुमार

जीत नहीं सकती हमारी बेटियां,
दुनिया को थी ये भ्रांति,
देखो, वर्ल्ड कप जीत कर
आ गई हैं, क्रांति।

देश जश्न में है डूबा हुआ,
मन को मिल रही है बड़ी शांति,
देखो, वर्ल्ड कप जीत कर
आ गई हैं,क्रांति।

कभी हम थे कमजोर टीम,
आज दुनिया हमारा लोहा मानती,
देखो, वर्ल्ड कप जीत कर
आ गई हैं, क्रांति।

एम.पी. के छोटे से जिले
छतरपुर से निकली बेटी,
जिसकी नहीं थी कोई पहचान,
आज जीत लिया है उसने दिल देश का
अब दुनिया भी उसे जानती,
देखो, वर्ल्ड कप जीत कर
आ गई हैं, क्रांति।

कहानी

डॉ. वन्दना अग्निहोत्री

भरोसा

शारदा जी बोली बड़ी भाभी के यहां सत्यनारायण भगवान की कथा है उनके यहां जल्दी जाकर तैयारी भी करवाना है और भोपाल शादी में भी जाना है तुमने तैयारी की या नहीं शारदा देवी की आवाज में गुस्सा साफ झलक रहा था। मैं जल्दी ही आती हूं मां जी कहकर शिवानी बाहर निकल गई। रितेश के साथ कार में बैठते ही शिवानी ने अपने मन की भड़ास निकालना शुरू की देखा आपने ,मेरा कहीं भी जाना मां जी को अच्छा नहीं लगता, चाहे मेरा मायके जाना हो,चाहे बाजार जाना हो और अब तो अथर्व के स्कूल जाने पर भी ना नुकूर कर रही हैं।ननद,देवर और यहां तक की देवरानी भी कहीं चली जाएं कहीं भी घूम आएं कोई पूछने वाला नहीं है। सब अपेक्षा मुझसे ही है सब काम मुझ पर ही थोप रखे हैं ।

शारदा देवी की छोटी बहू तो सुबह 8 बजे ही आफिस चली गई थी और बड़ी बहू बहुत फुर्ती से एक के बाद एक कम निपटा रही थी,देखकर ही शारदा देवी ने अनुमान लगा लिया कि उसे शायद कहीं जाना होगा। बड़ी बहू का ज्यादा कहीं आना जाना उन्हें रास नहीं आता क्योंकि घर परिवार के सारे काम काज ठप्प हो जाते हैं इसलिए उन्होंने पूछ ही लिया क्यों शिवानी आज बड़ी स्पीड में हो, हां मां जी अथर्व के स्कूल जाना है मैं और उसके पापा दोनों ही जाएंगे जैसे ही शिवानी ने बताया शारदा देवी का स्वर गूंजा तुम्हें जाने की क्या जरूरत है ,अकेले रितेश को जाने दो ,वह बात कर आयेगा फिर तुम्हें बता देगा दोनों का जाना जरूरी नहीं है। शिवानी ने धीरे से समझाया नहीं मां जी स्कूल से मुझे ही फोन आया था तो मुझे जाना चाहिए न,पता नहीं क्या हुआ होगा ,किस कारण से बुलाया है, कोई टेंशन की बात न हो ,उसके चेहरे पर चिंता की लकीरें साफ दिखाई दे रही थीं।

शारदा जी बोली बड़ी भाभी के यहां सत्यनारायण भगवान की कथा है उनके यहां जल्दी जाकर तैयारी भी करवाना है और भोपाल शादी में भी जाना है तुमने तैयारी की या नहीं शारदा देवी की आवाज में गुस्सा साफ झलक रहा था। मैं जल्दी ही आती हूं मां जी कहकर शिवानी बाहर निकल गई।

रितेश के साथ कार में बैठते ही शिवानी ने अपने मन की भड़ास निकालना शुरू की देखा आपने ,मेरा कहीं भी जाना मां जी को अच्छा नहीं लगता, चाहे मेरा मायके जाना हो,चाहे बाजार जाना हो और अब तो अथर्व के स्कूल जाने पर भी ना नुकूर कर रही हैं।ननद,देवर और यहां तक की देवरानी भी कहीं चली जाएं कहीं भी घूम आएं कोई पूछने वाला नहीं है।सब अपेक्षा मुझसे ही है सब काम मुझ पर ही थोप रखे हैं ।

शिवानी के गुस्से से बड़बड़ाने को कम करने की गरज से रितेश ने कहा अरे तुम बड़ी बहू हो मां को तुम पर बहुत भरोसा है कि सब सम्हाल लोगी इसीलिए सब तुम पर सौंप रखा है।अपने महत्व को समझो यार, अब छोड़ो ।ये सुनकर तो शिवानी और भी भड़क गई बात काटते हुए बोली अब तुम उन सबकी तरफदारी मत करो, मुझे सब पता है नौकरी करनेवालों की कदर है मेरी कोई कदर नहीं , ठंडी सांस भरकर बोली काश इंग्लिश में पढ़ाई की होती तो कहीं अच्छी नौकरी मिल जाती आजकल हिंदी वालों को कोई पूछता ही नहीं बोलते बोलते शिवानी अब रुआंसी हो गई थी ।

दोनों ही चिंतित थे ,झिझकते हुए प्राचार्य कक्ष में प्रवेश किया प्राचार्य ने बात शुरू की 'मदर्स डे पर अथर्व ने जो कविता सुनाई थी वह आपने ही लिखी थी ' क्यों अच्छी नहीं थी क्या कुछ गलत लिखा मैने शिवानी घबरा कर बीच में ही बोल पड़ी।

अरे नहीं नहीं आपने तो बहुत सुंदर भावपूर्ण कविता की रचना की है ऐसी शुद्ध हिंदी कम ही देखने को मिलती है उन्होंने आगे कहा आप बहुत अच्छा लिखती हैं आपकी योग्यता के बारे में बताइए।

अपनी तारीफ सुनकर शिवानी खुश हो गई चहककर बोली हिंदी में एम, ए ,प्रथम श्रेणी में किया है मैडम और बी ,एड ,भी हूं शादी से पहले एक स्कूल में पढ़ाती भी थी लेकिन बाद में छोड़ दिया। प्राचार्य महोदया बहुत ध्यान से सुन रही थीं बोली फिर शादी के बाद पढ़ाना क्यों छोड़ दिया ससुराल वालों की पाबंदी है क्या ।नहीं पाबंदी तो नहीं है लेकिन बहुत अच्छी इंग्लिश न आने के कारण और फर्राटेदार अंग्रेजी न बोल पाने के कारण कुछ बात नहीं बन पाई।कितनी अजीब बात है न मैडम हिंदी पढ़ाने वाले शिक्षक को भी अंग्रेजी बोलना अनिवार्य है।उसके मन की टीस उसकी जबान पर आ गई थी।

शिवानी की निराशा देखकर प्राचार्य एकदम मुख्य मुद्दे पर आ गई आपके पास डिग्री भी है,अनुभव भी है और हिंदी भाषा पर आपकी पकड़ भी बहुत मजबूत है यह मैं अथर्व के माध्यम से जान चुकी हूं। हमारे यहां हिंदी शिक्षक की आवश्यकता है आप आवेदन दे दीजिए आपकी लिखित परीक्षा और इंटरव्यू ले लिया जाएगा ।आगे ईश्वर की इच्छा।

प्रसन्न मुख मुद्रा के साथ जब शिवानी और रितेश ने घर में कदम रखा सबकी नजरें उन पर ही टिकीं थी शारदा जी ने डपटा बोलीं कहां थे दोनों ,कितनी देर कर दी, फोन भी बंद आ रहा था,तुम्हें बोला था न,बड़ी भाभी के यहां पूजा में जल्दी जाना है वो इंतजार कर रही होंगी÷ शिवानी अब कहीं नहीं जाएगी अथर्व के स्कूल में इसकी नौकरी की बात हुई है वहां आवेदन देने से इंटरव्यू तक की तैयारी करनी है रितेश ने ये बोलकर बात समाप्त कर दी ,परन्तु शारदा जी कहां माननेवाली थीं अरे बहू छोड़ो ये दो चार हजार की नौकरी । दिनभर खटना पड़ेगा और फिर घर भी तो देखना है न।

नहीं मां जी दो चार हजार की नौकरी नहीं है,मुझे सी बी एस ई इंग्लिश स्कूल में हिंदी शिक्षक की नौकरी मिल रही है वेतन भी लगभग 15 हजार के आसपास होगा ,आज मेरी शिक्षा का सही मूल्यांकन हुआ है इसलिए अगर मेरा चयन हुआ तो मैं जरूर नौकरी करूंगी।शिवानी ने अपना निर्णय सबको सुना दिया ताकि कोई रोकने का प्रयास न करे। लेकिन बहू इससे तो परिवार में बहुत समस्याएं आ जाएंगी कैसे सब रिश्ते नाते निभा पाएंगे शारदा जी परेशानी के स्वर में बोलीं ।नहीं मां जी मैं नौकरी के साथ साथ परिवार और रिश्तेदार सबको सम्हाल लूंगी सबका निर्वाह कर लूंगी आप तो बस मुझे अपना आशीर्वाद दीजिए ये कहकर शिवानी ने उनके चरण स्पर्श कर लिए। शिवानी के सिर पर आशीर्वाद का हाथ रखते हुए शारदा देवी मुस्कुराती हुई बोली तभी तो बड़ी बहू मैं तुम पर इतना भरोसा करती हूं ।और चिंता मुक्त रहती हूं।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा अग्निबाण पब्लिकेशन, 121, देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर, म.प्र. से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

यथार्थवादी कला एवं जुझारू कलाकार दोमिये

कला
पंकज तिवारी
कला समीक्षक

समय परिवर्तनशील है और परिवर्तनशील है कला और उसकी दुनिया। कला समय की साक्षी है, कलाकार जो देखता है उसी को अपने अनुरूप उकेरने का प्रयास करता है पर कभी-कभी उसके हाथ बंधे होते हैं और वह चाह कर भी कुछ नया नहीं कर पाता क्योंकि वह किसी समाज, धर्म, शासक आदि के अधीन होता है। पूर्व में ऐसे ही घटनाओं की भरमार थी फलतः कलाकार बंधी हुई रेखाओं पर चलने को मजबूर था, कृतियों में कुछ नया करना तो चाहता था पर कर नहीं पाता था। वही महाराजाओं के शबीह चित्र, वीनस, देवी, देवता, पारम्परिक चित्रण तक सिमट कर रह गई थी कला और उसके विषय। हालांकि परम्परागत विषय और शास्त्रीय कला पद्धति को नकारते हुए नये पद्धति पर कार्य करने का सिलसिला कोई नया नहीं था ऐसी घटनाएं पहले भी घट चुकी थी पर रोमांसवाद को नकारते हुए यथार्थवाद के तरफ का झुकाव कलाकार ओनोरे दोमिये, जिनका जन्म अनूठे संस्कृति एवं संग्रहालयों पर गर्व कर सकने वाले, भूमध्य सागर के किनारे स्थित, फ्रांस के दूसरे सबसे बड़े एवं प्राचीन, विविध सांस्कृतिक गतिविधियों वाले शहर मार्सेय, जिसकी स्थापना युनानी व्यापारियों द्वारा की गई थी, में हुआ, के लिए एक जुनून साबित हुआ। मार्सेय हमेशा से ही साहित्यकारों, कलाकारों आदि लोगों का घर रहा है। समुद्र, पहाड़ जैसे प्राकृतिक सौंदर्य यहाँ की थाती रही हैं।

यथार्थवादी कला, कला की वह शैली है जिसमें कृतियाँ बिना किसी लाग-लपेट के, बिना किसी आदर्शीकरण, अलंकरण के अपने वास्तविक रूप में सृजित होती है। ऐसे कृतियों में कल्पना को बहुत कम महत्व दिया जाता है। गाँव, किसान, मजदूर, आम आदमी तथा उनके संघर्षों की गाथा, दुख-तकलीफ, जीवनचर्या सभी कुछ यथार्थवादी कलाकारों के प्रमुख विषय हुए। रहन-सहन के साथ ही वस्त्र, परिवेश, चेहरे की भाव-भंगिमाओं आदि का बारीकी से अध्ययन और अंकन भी उनके महत्वपूर्ण तत्वों में रहे हैं। छाया प्रकाश भी बिल्कुल ही सटीक हुआ करता था। पूरे यथार्थवाद के बारे में ये कहा जा सकता है कि अतिश्योक्ति जैसी चीजें यहाँ नहीं होती थीं। 19वीं शताब्दी के मध्य का समय रहा जब फ्रांस में इस आंदोलन की शुरुआत हुई। अब तक कलाकारों को रोमांसवाद, जहाँ कलाकृतियों में प्रकृति या अन्य में भी भव्यता, विशालता, रहस्यमयी घटनाएं, नाटकीय प्रकाश, तीव्र रंग, मिथक, लोक कथाओं आदि का प्रमुखता से दिखाने का धुन सवार था, का विरोध शुरू हो चुका था। अब समकालीन जीवन का चित्रण आरंभ हो गया था। चीजों को जैसे देखा जाता था वैसे ही बनाया

जाने लगा था। साज-श्रृंगार जैसे बाहरी आडंबरों का बोलबाला धीरे-धीरे नष्ट होने लगा था। साहित्यिक रचनाओं के साथ ही कला, संगीत में भी ये बदलाव नजर आने लगे थे। धनाढ्य एवं बड़े वर्गों से मोहभंग एवं जनसामान्य को पटल पर वरियता दी जाने लगी थी। कलाकार इन्हीं के बीच रहते हुए इन्हें चित्रित करना चाहता था और मजे की बात यह थी कि रूप-कुरूप जैसी बातें धीरे-धीरे नदारद हो रही थीं। कलाकारों के पटल पर अब कलाकार स्वयं भी अपने स्टूडियो और उसके अस्त-व्यस्त रहन-सहन के साथ बिना उसे सुंदर बनाए दिखने लगा था। हकीकत को हकीकत के साथ ही दिखाए जाने की बात नज़र आने लगी थी।

अब तक कला केवल सुंदरता और कल्पनाशीलता तक सीमित न रहते हुए समाज के बरअक्स अपनी बातें रखने लगी थी। ये समय ऐसा था जब कला के साथ ही साहित्य, नाट्य आदि विधाओं में भी बहुत कुछ बदल रहा था। जन-सामान्य को विशेष फलक प्राप्त हो रहा था। यथार्थवादी कला को आगे बढ़ाने हेतु दोमीये, कुर्बे सहित कुछ कलाकारों के योगदान को सदा याद रखा जाएगा। फिलहाल बात करेंगे दोमिये की।

दोमिये अपने आसपास व्याप्त घटनाओं का बारीकी से अध्ययन करते थे और जरूरत के मुताबिक व्यंग्य चित्र, रेखांकन या फिर भावों के गंभीरता को मापते हुए यथार्थ कृति का निर्माण किया करते थे। उनकी पहचान व्यंग्य चित्रकार के रूप मे सर्वाधिक थी। दोमीय के चित्रो के संबंध मे बाल्जाक ने कहा था कि ''इस चित्रकार के भीतर माइकेल एंजिलों छिप कर बैठे है।'' कल्पनाओं में जीना इन्हे पसंद नहीं था बल्कि इनके चित्र देखने से ये सिद्ध हो जाता है कि हर घटनाओं पर इनकी पैनी नजर होती थी। समाज के पाखंड स्वरूपों का वे विरोध करते थे। ऐसी घटनाएं जो मन को विचलित करती थी उनके विरुद्ध कृति बनाना, उनकी जीवन चर्या बन गई थी। अपने व्यंग्य चित्रो के द्वारा मध्यवर्ग, उसका अहंकार व खोखलापन, नेताओ के छद्म क्रियाकलापों तथा गरीबों के दुख व उच्च वर्ग के अन्यायपूर्ण व्यवहारों का भी उन्होंने उपहास उड़ाया। व्यंग्य चित्र में राजा की निंदा करने की वजह से उनको सजा भी हुई

और कार्टून बनाने पर रोक भी लगा दी गई परिणामतः मासिक पत्रिका %ला कैरिकेचर% जहाँ इनके व्यंग्य चित्र प्रकाशित होते थे का साथ भी छूट गया। बाद में ये %ला शारिवारि% में रेखाचित्रकार के रुप में कार्य करने लगे। तमाम अवरोधों जैसे शासकीय विरोध, विपन्नता, दृष्टि का कमजोर होना आदि, के बाद भी इन्होंने अपना मार्ग नहीं बदला। इनकी कला दिन-ब-दिन और निखरती चली गई पर विपन्नता का साथ हमेशा बना रहा शायद इसीलिए रंगीन कृतियाँ कम बन सकीं, पर बनी निरंतरता के साथ। जिस प्रकार रवि वर्मा बिना किसी विद्यालयी शिक्षा के, खुद के निरंतर अध्ययन से खुद ही कला विद्यालय बन बैठे थे कुछ यही हाल दोमीय का भी था हालांकि कहीं-कहीं किसी से कुछ सीखने की बात को भी झुठलाया नहीं जा सकता। व्यंग्य चित्र तथा रेखा चित्र का अच्छा संग्रह था दोमिये के पास। कुछ विद्वान इनके रेखांकनो की तुलना रेंब्रांट के रेखांकनों से करते हैं। स्ट्रोक, भाव, प्रवाह हर मामले में संपन्न प्रतीत हुई है इनकी कृतियाँ।

घमंड, समाज का खोखलापन, दिखावा आदि चीजों से दोमिये को चिढ़ थी उनके चित्रों में गरीबों का दर्द है, अमीरों के ढकोसलों पर व्यंग्य है। चित्र %रेल का डिब्बा (तीसरी श्रेणी)% में यथार्थ अपने चरम पर है, माँ बच्चे को चिपकाये हुए है थकान तथा सुकून का एक साथ संयोजन, रंगों पर कहीं-कहीं मोटे रेखांकन, बाकी यात्रियों पर भी यात्रा की थकान और थकान से सो गया एक बच्चा, रंगों के अंधेरेपन से झाँकती यथार्थ दुनिया कृति को असाधारण बना देती है, वहीं इसी विषय के दूसरे द्वितीय श्रेणी का डिब्बा चित्र में एक यात्री किस उत्सुकता के साथ बाहर झाँक रहा है कि कह पाना मुश्किल है। कोई पैमाना नहीं है जो उसके उत्सुकता को माप सके, हाँ वहाँ अगर मापा जा सकता है तो अपने कृतियों के प्रति दोमिये की ईमानदारी और लगनशीलता बस। घने चारकोलों के सार्थक जाल में हल्का सा लाल रंग कमाल का कार्य कर गया है। न्यायालय का माहौल, वकील की अपने साथी से वार्ता, चेहरे की गहन छानबीन, माथे पर की लकीरें, आदि बातें आपके अतिसंवेदनशील होने की निशानी हैं। डॉन क्विकजोट पर तो पूरी श्रृंखला ही देखी जा सकती है, कभी पहाड़ी पर, कभी मित्र के साथ। लिथोग्राफ, चित्र, मूर्ति, कैरिकेचर, कार्टून आपकी लगभग सभी विधायें एक से बढ़कर एक थीं। फ्रांस के सामाजिक एवं राजनीतिक गतिविधियों पर अच्छा खासा खाँका खींच पाने में आपकी कृतियाँ सफल हुई हैं।

दोमीय के रेखांकन इतने तीव्र आवेग वाले होते थे कि देखने वालों को तुरंत प्रभावित कर जाते थे। एक से बढ़कर एक यथार्थवादी विषय एवं संघर्षों पर उन्होंने रेखांकन, लिथोग्राफ, स्कल्पचर बनाए कि सामाजिक ताने-बाने पर हथौड़े जैसा प्रहार कहा जा सकता है। ट्रेन में चढ़ते-उतरते लोग, द्वितीय श्रेणी का संघर्ष आदि हृदयविदारक कृतियों में आ सकती हैं। इनके अधिकतर कृतियों में चेहरों पर बहुत ही बारीकी से काम किया हुआ दिखाई पड़ता है। स्कल्पचर में भी एक से बढ़कर भावों को दर्शाया गया है।

आपका अधिकांशतः समय सीन नदी पर बसे लूव्र में कृतियों को आत्मसात करने में बीतता था। थियेटर आडियंस, शैलियों की लड़ाई, भिखारी, आर्केस्ट्रा स्टाल, धोबिन भी आपके प्रमुख कृतियों में शामिल रहे हैं। कमजोर नेत्रों और गरीबी के बावजूद अपने कृतियों में खोये रहने वाले ओनोरे दोमिये 10 फरवरी, 1879 को सदा के लिए खो गये संघर्षशील कृतियों की थाती धरा को सौंप कर।

हिंदुत्व के लिए घातक है, सामाजिक विभेदीकरण

सामयिक
डॉ. जीवन एस रजक
लेखक साहित्यकार एवं प्रशासनिक अधिकारी हैं।

हिन्दुत्व के मूल में 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' और सामाजिक समरसता का भाव विद्यमान है। किन्तु जब इस व्यापक, समावेशी दर्शन, और आध्यात्मिक एकात्मता पर सामाजिक विभेदीकरण, मानसिक संकीर्णता, जातिगत अहंकार और वर्ण व्यवस्था की कठोर और भ्रामक व्याख्यां हावी हो जाती हैं, तो हिन्दुत्व का मूल चरित्र दूषित और मूल आत्मा अस्पष्ट होने लगती है। प्राचीन भारत में सामाजिक गतिशीलता और समाज के सुचारू संचालन के लिए 'वर्णव्यवस्था' नियत की गई थी, यह व्यवस्था मूलतः गुण, स्वभाव और कर्म पर आधारित थी और इसका उद्देश्य समाज में कार्यों का योग्यता अनुसार विभाजन और सामाजिक संतुलन था। वर्णव्यवस्था जन्म आधारित श्रेणीकरण नहीं था, इसलिए कर्म के आधार पर इसमें उन्नति और अवनति हो सकती थी।

अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम् ।
उदारचरितानां तु वसुधैवकुटुम्बकम् ॥
(महोपनिषद-4/71)

अर्थात् ''यह मेरा है और वह पराया है, यह संकीर्ण सोच का लक्षण है। उदार दृष्टिकोण वाले लोग संपूर्ण पृथ्वी को अपना परिवार मानते है।''

भारत की महान 'हिन्दू संस्कृति का यह विचार भौतिक सीमाओं और भेदभाव से परे जाकर मानवता के लिए समानता, प्रेम और बंधुत्व की प्रेरणा देता है। सामाजिक समरसता का यह संदेश धार्मिक, जातिगत, भाषाई और सांस्कृतिक विविधताओं के बावजूद समाज को एकजुट करता है।

हिन्दुत्व की मूल चेतना 'एकत्व' की है। हिन्दू धर्म एक ऐसा दर्शन है, जो संपूर्ण सृष्टि को एक ही चेतना का विस्तार मानता है। ''एक सद् विप्रा बहुदा वदन्ति'' से लेकर ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' तक, हिन्दू चिंतन का केन्द्र बिन्दु सदैव समता, करूणा, एकता और सामंजस्य रहा है।

भारतीय संस्कृति के समस्त उपासकों को एक सूत्र में बांधने के लिए ''हिन्दू'' शब्द एकमात्र साधन है। हिन्दुत्व भारतीयता के मूल में है। भारतीय समाज में कितनी भी सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक विविधता हो, किन्तु इसका मूल स्वरूप हिन्दुत्व का ही है। भारत में रहने वाला प्रत्येक नागरिक चाहे वह किसी भी धर्म, वर्ण, जाति, समुदाय क्षेत्र या वर्ण का हो, वास्तव में वह हिन्दुत्व का ही अनुसरणकर्ता है।

आसिन्धुसिन्धुपर्यंता यस्य भारतभूमिका ।
पितृभूः पुण्यभूश्चैव स वै हिन्दुरिति स्मृतः ।।

अर्थात् सिंधु नदी से लेकर समुद्र पर्यंत तक की भारत भूमि जिसकी पैतृक संपत्ति और पवित्र भूमि हो, वही हिन्दू है।

हिन्दुत्व के मूल में 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' और सामाजिक समरसता का भाव विद्यमान है। किन्तु जब इस व्यापक, समावेशी दर्शन, और आध्यात्मिक एकात्मता पर सामाजिक विभेदीकरण, मानसिक संकीर्णता, जातिगत अहंकार और वर्ण व्यवस्था की कठोर और भ्रामक व्याख्यां हावी हो जाती हैं, तो हिन्दुत्व का मूल चरित्र दूषित और मूल आत्मा अस्पष्ट होने लगती है।

प्राचीन भारत में सामाजिक गतिशीलता और समाज के सुचारू संचालन के लिए 'वर्णव्यवस्था' नियत की गई थी, यह व्यवस्था मूलतः गुण, स्वभाव और कर्म पर आधारित थी और इसका उद्देश्य समाज में कार्यों का योग्यता अनुसार विभाजन और सामाजिक संतुलन था। वर्णव्यवस्था जन्म आधारित श्रेणीकरण नहीं था, इसलिए कर्म के आधार पर इसमें उन्नति और अवनति हो सकती थी।

गीता में श्री कृष्ण कहते है-
चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः।
तस्य कर्तारमपि मां विद्ध्यकर्तारमव्ययम्।
(श्रीमद्भगवतगीता 4/17)

अर्थात ''प्रकृति के तीनों गुणों और उनसे संबंधित कर्म के अनुसार मेरे द्वारा मानव समाज के चार विभाग रचे गये हैं'' । अर्थात वर्ण निर्धारण का आधार जन्म नहीं बल्कि गुण और कर्म था।

इसी प्रकार मनुस्मृति में भी कहा गया है-
शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम् 7
क्षत्रियज जातमेवं तु विद्याद् वैश्यात् तथैव च 77
(मनुस्मृति 10/65)

अर्थात् ''श्रेष्ठ और अश्रेष्ठ कर्मो के अनुसार शूद्र कुल में उत्पन्न बालक ब्राह्मण और ब्राह्मण कुल में उत्पन्न बालक शूद्र हो जाता है। इसी प्रकार क्षत्रिय कुल और वैश्य कुल में उत्पन्न बालक का भी वर्ण परिवर्तन भी समझना चाहिए।'' कुल मिलाकर प्राचीन वर्ण व्यवस्था कर्म के आधार पर निर्धारित एक सामाजिक संतुलन की उत्तम व्यवस्था थी।

आधुनिक विज्ञान भी स्पष्ट रूप से स्थापित करता है कि, किसी भी जाति में जन्मजात श्रेष्ठता का कोई वैज्ञानिक आधार नही है। सभी मनुष्य समान आनुवांशिक क्षमता के साथ जन्म लेते है। सामाजिक प्रस्थति, पर्यावरण और अवसर किसी व्यक्ति की क्षमता और दिशा को निर्धारित करते है। इसीलिए जातिगत श्रेष्ठता अथवा हीनता वैज्ञानिक रूप से असत्य और सामाजिक रूप से हानिकारक है।

कालांतर में जब वर्ण व्यवस्था ने दूषित होकर जाति व्यवस्था का रूप ले लिया तो हिन्दू समाज में सामाजिक विभेदीकरण और जातिगत वैमनष्य उत्पन्न हो गया, जिसने ''हिन्दुत्व एकात्मता'' और हिन्दू समाज की समरसता को बहुत बुरी तरह से विकृत और विभेदीकृत किया। जिसका सीधा प्रभाव भारत की राष्ट्रीय भावना पर पड़ा, क्योंकि कोई भी राष्ट्र तभी सशक्त हो सकता है, जब उसके समस्त नागरिकों में एकता और समरसता की भावना विद्यमान हो।

आजादी के बाद संवैधानिक रूप से हमारे देश में 'समानता' को स्थापित किया गया। सामाजिक समरसता के लिए कानून बनाए गए। किन्तु हमें इस बात की स्वीकार करना पड़ेगा कि हजारों वर्षों से चले आ रहे जातिगत विभेदीकरण और जाति आधारित सामाजिक परम्पराओं को कुछ वर्षों में समाप्त नहीं किया जा सकता।

हमारे देश में जातिगत आधार पर जन्म लेने वाले जातिगत संगठन सामाजिक श्रेष्ठता और निम्नता को आधार मानकर समाज में वैमनस्यता की भावना फैलाने का काम लगातार करते रहे है। इससे न केवल हिन्दुत्व की भावना दूषित हुई बल्कि हिन्दू धर्म में जातिगत विभेदीकरण भी पैदा हुआ है। क्योंकि जब कोई संगठन सामाजिक असमानता और उपेक्षा की वास्तविक समस्याओं से इतर जातिगत पहचान को श्रेष्ठता, विरोध या राजनीतिक ध्रुवीकरण का आधार बना लेता है, तब वह समाधान नहीं बल्कि एक नया संघर्ष उत्पन्न करता है। ऐसे संगठन यह संदेश देते है, कि ''हम पहले जाति हैं, बाद में हिन्दू'' और यही मानसिकता हिन्दुत्व की बुनियाद को कमजोर करती है। हाल ही मध्यप्रदेश में जातिगत संगठनों की जातिगत टिप्पणियों ने हिन्दू धर्म की मूल भावना और सामाजिक समरसता को दूषित किया है।

वास्तविकता यह है कि हिन्दुत्व का मूल स्वरूप समन्वयकारी और समाधानकारी है, संघर्षकारी नहीं है। यह किसी जाति, क्षेत्र या वर्ग का धर्म नहीं है, बल्कि एक विस्तृत जीवन पद्धति है। जब श्रेष्ठता का अहंकार और पीड़ित होने की अतिशयोक्ति के कारण हिन्दू समाज जाति के आधार पर विभाजित होकर आंतरिक संघर्षों में उलझ जाता है, तो स्वभाविक रूप से उसकी सांस्कृतिक शक्ति, आध्यात्मिक ऊर्जा और सामाजिक एकता प्रभावित होती है, और यह नकारात्मक प्रभाव हिन्दुत्व की आत्मा को कमजोर करता है।

भारत की आध्यात्मिक परम्परा सदैव कहती आई है कि ''आत्मा न जाति की होती है, न वर्ण की और न किसी श्रेणी की।'' उपनिषद् कहते है-''नेति-नेति'', मैं यह शरीर नही, यह पहचान नहीं। इस तरह यदि आत्मा सर्वत्र समान है, तो जातिगत विभाजन केवल एक अहंकार है। यह अहंकार न व्यक्ति के लिए कल्याणकारी है, न समाज के लिए और न राष्ट्र के लिए।

यह सत्य है, कि भारत की सामाजिक व्यवस्था में हजारों वर्षों से जाति के आधार पर विभेदीकरण और शोषण की प्रवृत्तियाँ रही है। परन्तु यह भी सत्य है, कि बदलते आधुनिक परिवेश में पिछले दो-तीन दशकों में हमारे समाज में जातिवाद की जड़े बहुत कमजोर हुई है। समाज की युवा पीढ़ी ने जातिवाद की भावना को नकारा है। ऐसे में विश्वास किया जा सकता है, कि आने वाले समय में बहुत शीघ्र हमारा समाज जातिगत विभेदीकरण के भावना से मुक्त हो जाएगा। ऐसी स्थिति में हमें यह समझना पड़ेगा कि बदलते समाज में जातिगत विभेदीकरण के आधार पर वैमनस्य पैदा करना हिन्दुत्व की मूल भावना को कमजोर करना है।

हिन्दुत्व के सिद्धान्तों को जातिगत द्वेष से विकृत करने वाली मानसिकता हिन्दू समाज के लिए अंत्यत घातक है। यदि हम वास्तव में हिन्दुत्व को उसके दिव्य स्वरूप में पुनः स्थापित करना चाहते हैं, तो हमें ज्ञान, विवेक और आत्म-जागरण से जातिगत पूर्वाग्रह से ऊपर उठकर सोचना होगा। 'हिन्दुत्व' भारतीय जनमानस की जीवन पद्धति है। हिन्दू धर्म की आत्मा उज्जवल, उदार और अत्यंत व्यापक है। जब हिन्दू समाज एक होगा, उसमें सामाजिक समरसता होगी, तभी हिन्दुत्व सुरक्षित और उज्जवल होगा। सामाजिक विभेदीकरण हिन्दुत्व के लिए घातक है। याद रहे समता ही शक्ति है, एकता ही धर्म है और एकात्मता ही सच्चा हिन्दुत्व है।

कभी कसी, कभी ढीली है फैमिलीमैन तीन की कहानी

वेब सीरीज समीक्षा
आदित्य दुबे,
लेखक वेबसाइट ई- अंतर्भव के प्रबंध संचालक हैं।

चर्चित वेब सीरीज - ÷ द फैमिलीमैन ÷ का तीसरा संस्करण रिलीज हो चुका है। चार साल के लम्बे अन्तराल के बाद श्रीकांत तिवारी और जेके की जोड़ी एक बार फिर तकरार करती नजर आयेगी । इस बार कुछ नए कलाकार भी जुड़े हैं। सिरीज का आकार-प्रकार और एपिसोड की लम्बाई भी पहले से बढ़ गई है पर एक-दो चीजे हैं, जो इसे थोड़ा कमजोर करती हैं। इस संस्करण में निर्माता के पास कहने के लिए काफी कुछ है। एक तरफ श्रीकांत की निज़ी जिन्दगी , दूसरी तरफ नॉर्थ ईस्ट नागालैंड के कोहिमा में चल रही ड्रग तस्करी, तीसरी तरफ रुकमा बने जयदीप अहलावत की कहानी, चौथी मीरा बनीं निमरत कौर का चरित्र और फिर इसी बीच देश की राजनीति। इतना कुछ एक साथ चलता है जिसे कहानी को पिरोया गया है मगर फिर भी कहानी कभी कसी तो कभी ढीली लगती है।

शुरुआत में जब परिवार को श्रीकांत के काम के बारे में पता चलता है तो मजा आता है पर बाद में यही बात इमोशनल होकर मेलोड्रामा बन जाती है। जहाँ लगता है कि आप बोर हो सकते हैं वहाँ निर्देशकद्वय ने श्रीकांत और जेके का मस्ती मजाक डाला है। कुल मिलाकर कहानी ठीक चलती है पर अन्त में निराश करती है। आखिरी एपीसोड को जहाँ खत्म किया गया है, आपको महसूस होता है कि छः घंटे बर्बाद किए पर जवाब तो कुछ मिला ही नहीं।

मनोज बाजपेयी , एक अलग ढब के अभिनेता हैं। उनका अपना एक मैनेरिज़्म भी है मगर निभाये जाने वाले चरित्र को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिये वे अपने मैनेरिज़्म को कभी भी निभाये जाने वाले चरित्र पर हावी नहीं होने देते हैं । इस संस्करण में भी वो अपने चिर-परिचित अंदाज में नजर आए हैं। जेके के साथ कॉमेडी सीन में या परिवार के साथ सीरियस सीन में ,चार साल बाद लौटने पर भी उन्होंने श्रीकांत का चार्म कम नहीं होने दिया। मनोज अगर मुन्नाभाई हैं तो जेके के रोल में शारिब हाशमी उनके सर्किट हैं। दोनों को देखकर हमेशा मजा ही आता है। कलाकारों की इस भीड़ में भी वैसे सीजन की सारी चमक जयदीप अहलावत बटोर ले गए। वो हर सीन के हिसाब से खुद को स्विच करते रहते हैं। उनके संवाद सम्प्रेषण का अन्दाज़ इतना विलक्षण है कि वे मौन में भी मुखर प्रतीत होते हैं ।प्रियामणी पहले जैसी ही दमदार हैं। निमरत कौर का चरित्र नया है। उन्होंने सबके बीच बढ़िया काम किया है। कुल मिलकार सिरीज में अभिनय किसी का भी कमजोर नहीं है।

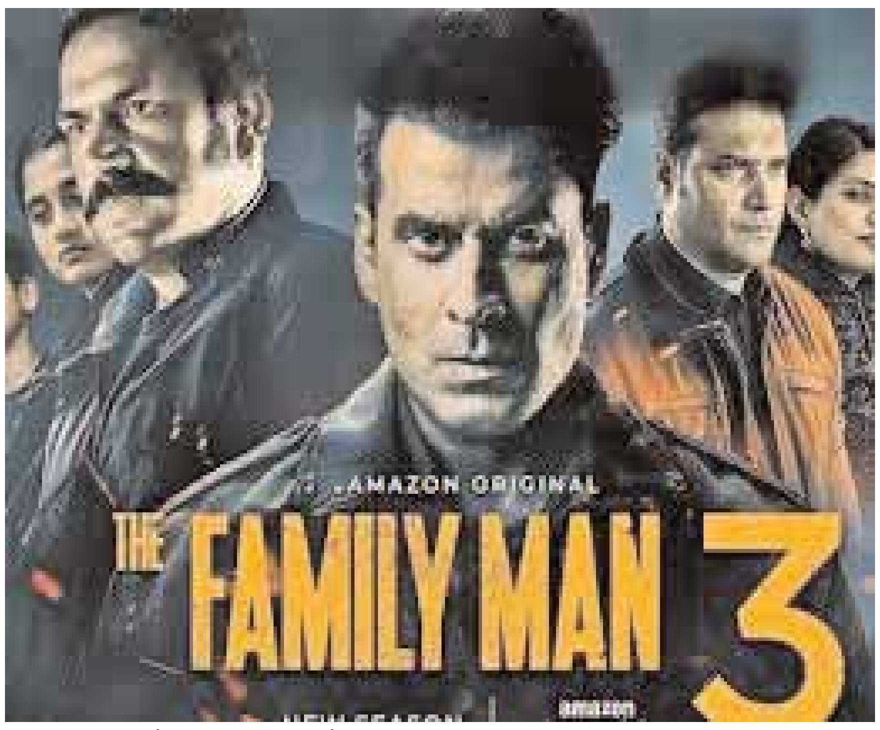

निर्देशकद्वय - राज और डीके ने सिनेमैटोग्राफी पर काफी मेहनत की है। नॉर्थ ईस्ट को बड़ी खूबसूरती से दिखाया। कई दृष्य बेहद मजेदार हैं। दोनों का दृष्यांकन का अलग ही अन्दाज़ है मगर जहाँ ये चूकते हैं वो है कहानी। शुरू से लेकर अन्त तक आप एक साथ कई चीजें दिखा रहे हैं। काफी डिटेल में भी दिखा रहे हैं पर फिर अन्त में आप बिना किसी जवाब के खत्म कर देते हैं, जैसे दर्शकों के प्रति आपकी कोई जिम्मेदारी ही नहीं है। जितने एक्साइटमेंट के साथ आप इस सिरीज़ को देखना शुरू करते हैं उतने की दुखी मन से इसे पूरा करके उठते हैं। अगले सीजन के लिए मसाला बचाने के चक्कर में राज और डीके ने दर्शकों के साथ गलत किया है। दोनों को कहानी पर थोड़ा और काम करना चाहिए था।

डिजिटल मीडिया पर लोकेन्द्र सिंह की पीएचडी

भोपाल। मीडिया शिक्षक एवं लेखक लोकेन्द्र सिंह को जागरण लेकसिटी विश्वविद्यालय (जेएलयू) से 'पत्रकारिता एवं जनसंचार' में पीएचडी की उपाधि प्रदान की गई है। उन्होंने 'हिन्दी समाचारपत्रों की वेबसाइट और पाठकों की मीडिया आदतें - एक विश्लेषणात्मक अध्ययन' विषय पर अपना शोध कार्य किया है। यह शोध जेएलयू के सहायक प्राध्यापक डॉ. शिवेन्द्र कुमार मिश्रा के निर्देशन में पूर्ण किया है। डॉ. सिंह वर्तमान में माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल में सहायक प्राध्यापक हैं।

डॉ. लोकेन्द्र सिंह ने अपने शोध में पाया कि इन्टरनेट और मोबाइल फ़ोन की इस व्यापक पहुँच ने पिछले कुछ वर्षों में पत्रकारिता के माध्यमों को प्रभावित किया है। समाचार प्राप्त करने एवं पढ़ने की आदतों को भी वेब पत्रकारिता ने प्रभावित किया है। उनके शोध से सामने आया है कि समाचार पढ़ने के लिए पाठक समाचार वेबसाइट का उपयोग इसलिए करना अधिक पसंद करते हैं क्योंकि समाचार वेबसाइट पर वे अपनी सुविधा से कहीं भी और कभी भी समाचार पढ़ सकते हैं। दूसरा प्रमुख कारण है कि समाचार वेबसाइट पर उन्हें पाठ्य सामग्री के साथ ही ऑडियो और वीडियो भी मिल जाते हैं। हालांकि, पाठकों की पहली प्राथमिकता पाठ्य सामग्री ही है। इसके साथ ही यह बात भी सामने आई है कि वेबसाइट पर समाचार पढ़ने और साझा करने में पाठक राजनीति समाचारों को वरीयता देते हैं। इसके साथ ही पाठक मनोरंजन, शिक्षा, खेल और स्वास्थ्य इत्यादि विषयों के समाचारों को पढ़ाना और शेयर करना पसंद करते हैं।

फार्मेसी काउंसिल के अध्यक्ष संजय जैन पर केस दर्ज

दफ्तर में बंधक बनाकर युवक की पिटाई, प्राइवेट पार्ट पर लात मारने के लगे थे आरोप

भोपाल (नप्र)। भोपाल में फार्मेसी काउंसिल दफ्तर के परिसर में युवक के साथ मारपीट मामले में हबीबगंज थाना पुलिस ने अध्यक्ष संजय जैन और अन्य के खिलाफ मारपीट की एफआईआर दर्ज की है। कार्रवाई युवक के साथ मारपीट के वायरल वीडियो के आधार पर की गई है। वहीं मारपीट का शिकार युवक के खिलाफ फार्मेसी काउंसिल के कर्मचारी की शिकायत पर शासकीय कार्य में बाधा पहुंचाने और मारपीट का केस दर्ज किया गया है। फिलहाल दोनों ही पक्षों में किसी की गिरफ्तारी नहीं की जा सकी है।

पीड़ित युवक ने जारी किया था वीडियो- जानकारी के मुताबिक पीड़ित ने शुक्रवार को एक वीडियो भी जारी किया था। इसमें रोते हुए कहा- मेरा नाम तुषार सोनारे है। फार्मेसी काउंसिल के अध्यक्ष संजय जैन, केके यादव, गोपाल यादव और अन्य अधिकारियों ने मुझे खूब मारा है। मुझे घसीटकर अंदर ले गए। मेरे प्राइवेट पार्ट पर भी मारा, ब्लीडिंग हो रही है। मुख्यमंत्री से गुहार है कि कार्रवाई करें। उसने आगे कहा कि वारदात के वक्त मौजूद पुलिसकर्मी सिर्फ खड़ा देखता रहा। फार्मेसी काउंसिल के अधिकारियों ने मिलकर तुषार सुनार को पकड़ा। उससे मारपीट की।

विवाद का कारण- तुषार के मुताबिक, वह पिछले एक महीने से सर्टिफिकेट पर डिजिटल साइन कराने के लिए काउंसिल के चक्कर काट रहा था। हर बार उसे टरका दिया जाता। रजिस्ट्रार मैडम से शिकायत करने गया तो वे लंच पर चली गईं। घंटों तक लौटकर नहीं आईं। शुक्रवार को वह एक बार फिर काउंसिल पहुंचा। अधिकारी के केबिन में जाने लगा तो गार्ड ने उसे रोक लिया। गार्ड ने उसका कॉलर पकड़ा और धक्का दे दिया। जब उसने खुद को छुड़ाया तो गार्ड पीछे की ओर गिर गया और चैनल से टकरा गया। इसके बाद पूरा स्टाफ बाहर आ गया। सभी उसे घेरकर मारने लगे।

वीडियो बनाने को लेकर हुआ विवाद- तुषार ने बताया कि लगातार चक्कर लगाने के कारण वो निराश था।

रीवा सांसद ने आईएएस संतोष वर्मा के प्रमोशन पर उठाए सवाल

एससी से एसटी होने का आरोप, करणी सेना चीफ बोले- आमलेट बना दो इसकी

रीवा (नप्र)। मध्य प्रदेश के वरिष्ठ आईएएस अधिकारी संतोष वर्मा के प्रमोशन और उनके द्वारा दिए गए एक विवादित बयान को लेकर हंगामा खड़ा हो गया है। रीवा सांसद जनार्दन मिश्रा ने वर्मा के प्रमोशन की जांच की मांग की है, जबकि क्षत्रिय करणी सेना के युवा राष्ट्रीय अध्यक्ष ओकेंद्र राणा ने उनके खिलाफ आपत्तिजनक टिप्पणी की है। कहा इनका आमलेट बना दो।मध्य प्रदेश सरकार ने भी वर्मा को नोटिस जारी कर सात दिन में जवाब मांगा है।

सांसद ने चयन और प्रमोशन पर उठाए सवाल- सांसद जनार्दन मिश्रा ने केंद्रीय कार्मिक, लोक शिकायत एवं पेंशन राज्य मंत्री जितेंद्र सिंह को लिखे पत्र में आईएएस संतोष वर्मा के चयन और पदोन्नति पर सवाल उठाए हैं। उन्होंने कहा कि वर्मा का चयन भारतीय प्रशासनिक सेवा में नियमों के विपरीत हुआ था। वर्मा को अनुसूचित जाति की जगह अनुसूचित जनजाति वर्ग में चयनित किया गया था। सांसद मिश्रा ने यह भी दावा किया कि वर्ष 2021 में अदालत ने वर्मा के चयन और प्रमाणीकरण को गलत ठहराया था। न्यायालय के आदेशानुसार वर्मा को पद और वेतन लाभ से वंचित किया जाना चाहिए था।

प्रदेश के 12 शहरों में पारा 10डिग्री से नीचे

भोपाल, इंदौर-उज्जैन में कोहरा; एक्सपर्ट की सलाह-सुबह ध्यान से चलाएं गाड़ी

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में ठंड ने फिर यू टर्न ले लिया है। कल रात जबलपुर, ग्वालियर समेत प्रदेश के 12 शहरों में पारा 10 डिग्री से नीचे पहुंच गया। वहीं, शनिवार को इंदौर, भोपाल-उज्जैन समेत कई जिलों में सुबह कोहरा छा रहा। ऐसे में एक्सपर्ट ने सलाह दी है कि कोहरे के बीच सुबह गाड़ी ध्यान से चलाएं। ताकि, हादसे की संभावना न रहे।

मौसम विभाग के अनुसार, पाकिस्तान के ऊपर से पश्चिमी विक्षोभ (वेस्टर्न डिस्टरबेंस) एक्टिव है, जबकि राजस्थान में साइक्लोनिक सर्कुलेशन (चक्रवात) की एक्टिविटी देखने को मिल रही है। दूसरी ओर, उत्तर से भी हवाएं आ रही हैं। इस वजह से प्रदेश के मौसम में एक बार फिर ठंडक घुल गई है। दूसरी ओर, कोहरा भी छा रहा है। भोपाल में रात से ही धुंध का असर शुरू हो जाता है। वहीं, सुबह के समय विजिबिलिटी 1 से डेढ़ हजार मीटर तक रहती है। शनिवार को भी कोहरे का असर बना रहा।

एक सप्ताह बाद पारे में फिर गिरावट- पिछले एक सप्ताह से प्रदेश में दिन-रात के तापमान में बढ़ोतरी देखने को मिल रही थी, लेकिन गुरुवार-शुक्रवार की रात में पारा फिर से लुढ़कने लगा है। एक ही रात में 4 से 5 डिग्री तक की गिरावट दर्ज की गई है। मौसम विभाग के अनुसार, शहडोल का कल्याणपुर सबसे ठंडा रहा। यहां तापमान 6.1 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। छतरपुर के नौगांव में 6.5 डिग्री, रीवा में 6.8 डिग्री, उमरिया में 6.9 डिग्री, खजुराहो में 7.8 डिग्री, मलाजखंड में 8.6 डिग्री, दतिया में 9 डिग्री, मंडला में 9.3 डिग्री और राजगढ़ में पारा 9.6 डिग्री रहा।

बड़े शहरों में जबलपुर में पारा सबसे कम 9.4 डिग्री रहा। भोपाल में एक ही रात में चार डिग्री की गिरावट के बाद तापमान 11 डिग्री दर्ज किया गया। इंदौर में 15.1 डिग्री, ग्वालियर में 9.7 डिग्री और उज्जैन में 15.5 डिग्री सेल्सियस रहा। बाकी शहरों में पारा 10 डिग्री से ज्यादा रहा।

6 से 22 नवंबर तक कड़ाके की ठंड रही- बता दें कि प्रदेश में 6 नवंबर से ही कड़ाके की ठंड का दौर शुरू हो गया था। आम तौर पर नवंबर के दूसरे पखवाड़े से तेज ठंड पड़ती है, लेकिन इस बार पहाड़ी राज्य- हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और जम्मू-कश्मीर में समय से पहले बर्फबारी हो गई।

इस वजह से बर्फीली हवाओं से एमपी भी कांप उठा। भोपाल में लगातार 15 दिन तक शीतलहर चली। रिकॉर्ड के अनुसार, साल 1931 के बाद शीतलहर का यह सबसे ज्यादा दिन है। दूसरी ओर, यहां रात का पारा 5.2 डिग्री तक पहुंच गया, जो ओवरऑल रिकॉर्ड भी रहा। इंदौर में नवंबर की सर्दी का 25 साल का रिकॉर्ड टूट गया। 22 नवंबर तक तेज ठंड का असर रहा, लेकिन इसके बाद शीतलहर से राहत मिली। ऐसा हवा का दिशा से बदलना रहा।

मां बगलामुखी मंदिर की करोड़ों की जमीन पर कब्जा खत्म

20 साल पुराने भूमि विवाद पर आया फैसला, जेसीबी पहुंची

आगर (नप्र)। आगर मालवा जिले के नलखेड़ा में स्थित विश्व प्रसिद्ध मां बगलामुखी मंदिर की कीमती जमीन पर हुए अतिक्रमण को एमपी हाई कोर्ट के फैसले के बाद शुक्रवार देर रात जेसीबी की मदद से हटा दिया गया। यह मामला 2007 से चल रहा था, जब कुछ लोगों ने फर्जी दस्तावेजों के आधार पर जमीन पर कब्जा करने की कोशिश की थी। कोर्ट ने उनकी अपील खारिज कर दी और सरकार का अधिकार स्थापित किया।

हाईकोर्ट ने डिक्री को बताया था अवैध- हाई कोर्ट ने 1997 में मिली डिक्री को धोखे से और दस्तावेज छुपाकर प्राप्त किया गया बताया। कोर्ट ने कहा कि यह डिक्री कानूनी रूप से सही नहीं थी। कोर्ट ने यह भी पाया कि वसीयतनामा संदिग्ध था और पुराने सरकारी रिकॉर्ड मंदिर की पारंपरिक व्यवस्था की पुष्टि करते थे।

सरकार की ओर एडवोकेट सोनी ने रखा पक्ष- शासन की ओर से अतिरिक्त महाधिवक्ता आनंद सोनी ने कोर्ट में मजबूती से पक्ष रखा। उन्होंने सरकारी रिकॉर्ड, मंदिर की ऐतिहासिक स्थिति और फर्जी दस्तावेजों के बारे में विस्तार से बताया। कोर्ट ने माना कि धोखाधड़ी से जमीन पर गलत दावा किया गया था।

जेसीबी से हटाया गया अतिक्रमण- हाई कोर्ट के फैसले से मंदिर की जमीन सुरक्षित हो गई है। फैसला आने के बाद शुक्रवार रात को पुलिस, प्रशासन और अन्य विभागों की टीम ने मौके पर पहुंचकर जेसीबी से अतिक्रमण हटाया। इस कार्रवाई से अतिक्रमण करने वालों में हड़कंप मच गया। मौके पर मौजूद अधिकारियों ने इस बारे में कोई भी जानकारी देने से इनकार कर दिया।

एमपी के सभी टाइगर रिजर्व में नाइट सफारी बंद

सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर 1 दिसंबर से रोक; एडवांस बुकिंग का पैसा वापस होगा

नर्मदापुरम (नप्र)। मध्यप्रदेश के सभी टाइगर रिजर्व में अब नाइट सफारी नहीं होगी। सुप्रीम कोर्ट के 17 नवंबर को दिए गए आदेश के बाद 1 दिसंबर 2025 से प्रदेशभर में रात्रिकालीन सफारी पर पूरी तरह रोक लगाई जा रही है। जिन पर्यटकों ने पहले से एडवांस बुकिंग कर रखी है, उन्हें पूरी राशि वापस की जाएगी। प्रधान मुख्य वन संरक्षक

(वन्यजीव) शुभरंजन सेन ने इस संबंध में सभी टाइगर रिजर्व के फील्ड डायरेक्टरों को आदेश जारी कर दिए हैं। इसके तहत सतपुड़ा टाइगर रिजर्व समेत प्रदेश के सभी रिजर्व में नाइट सफारी तत्काल प्रभाव से बंद करने के निर्देश दिए गए हैं।

अब केवल डे सफारी की ही अनुमति

सतपुड़ा टाइगर रिजर्व की फील्ड डायरेक्टर राखी नंदा ने बताया कि सुप्रीम कोर्ट के आदेश के अनुसार 1 दिसंबर से बफर क्षेत्रों में संचालित रात्रिकालीन सफारी पर प्रतिबंध रहेगा। जिन पर्यटकों ने एडवांस बुकिंग कराई है, उन्हें निर्धारित प्रक्रिया के तहत राशि लौटाई जाएगी।

अब तक सतपुड़ा टाइगर रिजर्व के पिपरिया बफर, बागड़ा बफर और देलाखारी बफर क्षेत्रों में दिन और रात दोनों समय सफारी संचालित होती थी। नाइट सफारी का समय शाम 6 बजे से तय था। प्रतिबंध के बाद अब केवल डे सफारी की ही अनुमति रहेगी। यह फैसला वन्य जीवों की सुरक्षा और प्राकृतिक व्यवहार में हस्तक्षेप रोकने के उद्देश्य से लिया गया है।

पर्यटकों के लिए क्या बदलेगा?

- अब किसी भी टाइगर रिजर्व में नाइट सफारी नहीं मिलेगी।
- सिर्फ डे सफारी संचालित होगी।
- एडवांस बुकिंग का पूरा पैसा रिफंड।
- बफर एरिया में भी रात्रिकालीन प्रवेश प्रतिबंधित।

ग्राहक बनकर पहुंचे अफसर, कच्चा बिल थमाते ही कर दिया 'खेल'!

सतना में 3 बड़े जूलर्स पर जीएसटी का छापा

सतना (नप्र)। एमपी में सतना जिले के सर्राफा बाजार में शुक्रवार की शाम उस वक्त हड़कंप मच गया, जब स्टेट जीएसटी की एंटी इवेज़न ब्यूरो की टीम ने फिल्मी अंदाज में शहर के तीन नामचीन ज्वेलरी शोरूम्स पर एक साथ 'दबिश' दी। अधिकारियों ने पहले ग्राहक बनकर रेकी की और जैसे ही दुकानदारों ने टैक्स चोरी का खेल शुरू किया, पूरी टीम ने दबिश दे दी। यह कार्रवाई हनुमान चौक और फूलचंद चौक स्थित कान्हा ज्वेलर्स, न्यू कान्हा ज्वेलर्स और आनंद आदित्य ज्वेलर्स पर की गई।

खुफिया तरीके से की कार्रवाई- दरअसल टीम के कार्रवाई का तरीका बेहद खुफिया था। शाम करीब 5 बजे, सादे कपड़ों में कुछ अधिकारी आम ग्राहक बनकर इन शोरूम्स में दाखिल हुए। उन्होंने जेवर पसंद किए और बिलिंग की बात की। जैसे ही शोरूम संचालकों ने जीएसटी बचाने का लालच देते हुए 'कच्चे बिल' पर सामान देने या पक्का बिल न लेने की पेशकश की, अधिकारियों ने बाहर खड़ी अपनी टीम को इशारा कर दिया। देखते ही देखते 24 से ज्यादा अधिकारियों की फौज दुकानों के अंदर दाखिल हो गई और शटर गिराकर जांच शुरू कर दी गई।

जेपीनगर में हाईटेंशन लाइन से युवक झुलसा

फ्लेक्स लगा रहा था, तभी झटका लगा; 15 फीट नीचे गिरा

भोपाल (नप्र)। भोपाल के जेपी नगर इलाके में शनिवार को बड़ा हादसा हो गया। करीब 15 फीट ऊंचाई पर फ्लेक्स लगा रहे एक युवक को बिजली करंट का झटका लगा और वह नीचे जमीन पर आ गया। करंट लगने से वह झुलस गया। उसे तत्काल अस्पताल ले जाया गया। घटना शनिवार दोपहर साढ़े 12 बजे की है। जेपी नगर में बिजली कंपनी ऑफिस के सामने सड़क किनारे पोल पर एक युवक फ्लेक्स लगा रहा था। इसी पोल के ऊपर से हाईटेंशन लाइन भी गुजर रही है। तभी युवक हाईटेंशन लाइन की चपेट में आ गया।

कुछ देर तक पोल पर ही तड़पता रहा, फिर नीचे गिरा- बताया जा रहा है कि युवक लोहे के फ्रेम पर फ्लेक्स लगा रहा था। तभी फ्रेम हाईटेंशन लाइन के संपर्क में आ गया और युवक को तेज करंट लग गया। इससे वह कुछ देर तक फ्रेम के बीच में ही तड़पता रहा। इसके बाद नीचे गिर गया।

इलाके में अफरा-तफरी मची- युवक को करंट लगने के बाद इलाके में अफरा-तफरी मच गई। मुख्य सड़क पर जाम की स्थिति भी बन गई। तुरंत युवक को ऑटो के जरिए अस्पताल ले जाया गया। जहां इलाज किया जा रहा है।

जेन-जेड ने आईएएस के पुतले को गधे पर घुमाया

ब्राह्मण बेटियों पर संतोष वर्मा के बयान को लेकर विरोध प्रदर्शन, पुतले को जूते-चप्पलों से पीटा

भोपाल (नप्र)। अजाक्स के प्रांताध्यक्ष और सीनियर आईएएस अधिकारी संतोष वर्मा के ब्राह्मण की बेटियों को लेकर दिए बयान को लेकर विरोध तेज होता जा रहा है। शनिवार को बरकतउल्ला विश्वविद्यालय (बीयू) के सामने सैकड़ों की संख्या में जेन जेड ने पंडित आशीष शर्मा के नेतृत्व में जोरदार प्रदर्शन किया। प्रदर्शन के दौरान संतोष वर्मा के पुतले को गधे पर बैठाकर घुमाया गया। इस दौरान पुतले की जूते-चप्पलों से जमकर पिटाई की गई।

प्रदर्शन का नेतृत्व कर रहे आशीष शर्मा ने कहा कि यह मामला केवल एक समाज नहीं, बल्कि प्रदेश की सभी बहन-बेटियों के सम्मान से जुड़ा हुआ है। इसलिए दोषी अधिकारी पर तत्काल एफआईआर दर्ज कर निलंबन आवश्यक है।

भाजपा के ब्राह्मण नेता चुप्पी साधे बैठे- कांग्रेस प्रवक्ता विवेक त्रिपाठी ने प्रदर्शन के दौरान कहा कि आईएएस संतोष वर्मा के बयान पर पूरे सवर्ण समाज में आक्रोश है, लेकिन भाजपा के ब्राह्मण नेता चुप्पी साधे बैठे हैं। क्या उनका जमीर खत्म हो गया है? जब एक समाज की बहन-बेटियों के सम्मान पर चोट पहुंचाई जा रही है, तब भाजपा नेता सड़कों पर क्यों नहीं उतर रहे? प्रदेश में ऐसी अभद्र मानसिकता को किसी भी स्थिति में बर्दाश्त नहीं किया जा सकता।

गधे पर बैठाकर जुलूस निकालने की धमकी- प्रदर्शन का नेतृत्व कर रहे पंडित आशीष शर्मा ने चेतावनी देते हुए कहा- आज हमने उनके पुतले को गधे पर बैठाकर पिटाई की है। यदि सरकार ने जल्द से जल्द संतोष वर्मा को निलंबित कर उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज नहीं की तो जेन-जेड खुद संतोष वर्मा को उनके घर से बाहर निकाल कर इसी तरह गधे पर बैठाकर पूरे मध्य प्रदेश में जुलूस निकालेंगे।

कार्रवाई नहीं होने तक आंदोलन जारी रहेगा- प्रदर्शनकारी अभिषेक द्विवेदी ने कहा- संतोष वर्मा ने जिस तरह का बयान दिया है, वह न केवल निंदनीय है, बल्कि समाज में अशांति फैलाने वाला है। हम उनकी स्थिति गधे से भी बदतर करेंगे, ताकि भविष्य में किसी भी अधिकारी को ऐसी गंदी मानसिकता का प्रदर्शन करने से पहले सौ बार सोचना पड़े। वहीं लकी चौबे ने कहा कि जब तक दोषी अधिकारी पर कार्रवाई नहीं होती, तब तक यह आंदोलन जारी रहेगा। प्रदर्शन में अक्षय तोमर, रवि परमार, लकी चौबे, प्रतीक यादव, अभिषेक द्विवेदी, अंकित शर्मा, आदित त्रिपाठी साहिल प्रताव सिंह, अमित बूबड़े सहित सवर्ण समाज के सैकड़ों युवा शामिल थे ।

पुश्तैनी घर को लेकर भावनाएं कुछ अलग होती हैं। क्योंकि, वहां कई पीढ़ियों की यादें, खासकर बचपन की यादें बसी होती है, बूढ़ों का आशीर्वाद बसा होता है। ऐसी कुछ भावनाएं हैं फिल्म इंडस्ट्री के सबसे बड़े, पहले और समृद्ध कपूर परिवार की, क्योंकि उन्हें मजबूरी में राज कपूर का खूबसूरत कॉटेज बेचना पड़ा जहां पर वे सब बड़े हुए। आखिर क्यों कपूर परिवार ने उस बंगले को बेच दिया जिसमें राज कपूर की अनगिनत यादें बसी हैं।

'डाइनिंग विद द कपूर्स'

कपूर खानदान के रिश्तों और खानपान का खुलासा

कपूर खानदान पर बनी डॉक्यूमेंट्री 'डाइनिंग विद द कपूर्स' नेटफ्लिक्स पर आ गई। यह शो दर्शकों को कपूर परिवार के सदस्यों के रिश्ते और खाने के लिए उनके प्यार की एक झलक दिखाता है। 1 घंटे 1 मिनट की यह दिल को छूने वाली डॉक्यूमेंट्री अरमान जैन ने बनाई है और स्मृति मुंद्रा ने डायरेक्ट की है। यह भारत के सबसे प्यारे फिल्म परिवारों में से एक को करीब से दिखाता है। इसे

'फ्लाई ऑन द वॉल' डॉक्यूमेंट्री स्टाइल में शूट किया गया है जिसमें मजेदार नोकझोंक से लेकर प्यारी बातें तक शामिल हैं और ये सब उनके असली जुनून, खाने से जुड़ा है।

इसके अलावा यह शो मशहूर राज कपूर की जिंदगी और चेंबूर ईस्ट में उनके देवनार कॉटेज की प्यारी यादों को भी दिखाता है। दुख की बात है कि भारत के सबसे पुराने फिल्म परिवार को अपनी पुश्तैनी प्रॉपर्टी 'देवनार कॉटेज' छोड़नी पड़ी और आरके स्टूडियो को गोदरेज प्रॉपर्टीज़ को बेच दिया गया। शो में, राज कपूर की बेटी रीमा जैन और परिवार के दूसरे सदस्य, जिनमें रणधीर कपूर, करिश्मा कपूर, करीना कपूर और रणबीर कपूर शामिल हैं। वे देवनार कॉटेज जाकर बचपन की पुरानी यादों को ताजा करते हुए नजर आते हैं।

रीमा जैन के मुताबिक, राज कपूर की पत्नी कृष्णा कपूर ने अपने बच्चों को सलाह दी थी कि उनके जाने के बाद वे ईंटों और दीवारों से ज्यादा न चिपके रहें। क्योंकि, घर बहुत बड़ा हो जाएगा और उसे संभालना मुश्किल होगा। यह मशहूर फिल्म स्टूडियो सितंबर 2017 में एक बड़ी आग में फंस गया था। स्टूडियो का एक बड़ा हिस्सा, जिसमें राज कपूर का मेरा नाम जोकर का मास्क और आवारा पियानो जैसी कीमती यादगार चीजें शामिल थीं, जलकर खाक हो गया था। साथ ही स्टूडियो कई सालों से घाटे में चल रहा था, इसलिए लेटेस्ट टेक्नोलॉजी से इसे फिर से बनाना पैसे के हिसाब से फायदेमंद नहीं था। देवनार कॉटेज मुंबई के चेंबूर में राज कपूर का पर्सनल बंगला था, जहां वे अपने परिवार के साथ रहते थे। कॉटेज के पास बना आरके स्टूडियो उनकी फिल्म प्रोडक्शन कंपनी, आरके फिल्म्स का बेस था। बाद में इस प्रॉपर्टी को गोदरेज प्रॉपर्टीज को बेच दिया गया और उन्हें लग्जरी रेजिडेंशियल कॉम्प्लेक्स, गोदरेज आरकेएस में डेवलप किया गया।

'डाइनिंग विद द कपूर्स'

इस डॉक्यूमेंट्री में हिंदी सिनेमा के पहले फिल्म खानदान कपूर्स की एक खास मीटिंग है, जो बॉलीवुड के लेजेंड राज कपूर और परिवार के मुखिया, पृथ्वीराज कपूर के बेटे की सौवीं सालगिरह मनाने के लिए एक साथ आ रहे हैं। इसमें रणधीर कपूर, नीतू कपूर, रीमा जैन, रणबीर कपूर, करिश्मा कपूर, करीना कपूर खान, सैफ अली खान, रिद्धिमा कपूर साहनी और अदार जैन हैं और यह बॉलीवुड रॉयल्टी की पीढ़ी में एक बार होने वाली मीटिंग है, जो प्यार, विरासत और भाईचारे का जश्न मनाती है।

राज कपूर के बंगले में देवनार कॉटेज में एक ऐसा बंद कमरा था जो रहस्यमय बना हुआ था। इस बंद कमरे की मिस्ट्री के बारे में जानने के लिए लोग काफी उत्सुक रहते थे. तो चलिए बताते हैं कि आखिर उस बंद कमरे में ऐसा क्या था. राज कपूर और नरगिस की केमिस्ट्री शानदार थी. दोनों ने कई फिल्मों में साथ काम किया था. राज कपूर और नरगिस ने 'आवारा', 'बरसात' और 'श्री 420' जैसी फिल्मों में शानदार प्रदर्शन किया था. उन्होंने पेशेवर और व्यक्तिगत रूप से 16 वर्षों तक लगातार साथ काम किया. नरगिस राज कपूर से शादी करना चाहती थीं. ये जानते हुए कि राज कपूर शादीशुदा और 5 बच्चों के पिता थे. नरगिस उनके प्यार में कुछ इस कदर डूब गई थीं कि उन्होंने हर हाल में राज कपूर की पत्नी बनने की ठान ली थी. उनका बंधन इतना गहरा था कि राज कपूर के बंगले में एक कमरा 'नरगिस रूम' के नाम से जाना जाता था. मधु जैन ने अपनी किताब 'द कपूर- द फर्स्ट फैमिली ऑफ इंडियन सिनेमा' में लिखा है कि आर के कॉटेज, जो आर के स्टूडियो से पहले बनाया गया था, के पीछे एक कमरा था जिसे नरगिस का कमरा कहा जाता था. राज कपूर ने नरगिस के कपड़े और बर्तन के साथ एक मंदिर की तरह उस कमरे को संरक्षित किया था. इसे राज कपूर का पवित्र स्थान कहते हुए, मधु जैन लिखती हैं, 'वास्तविक राज कपूर यहां इस कमरे में रहते थे. यह उनके आंतरिक जीवन का एक मंदिर था. साधारण और आरामदायक, इस कॉटेज में वह सब कुछ था जो उनके लिए सबसे प्रिय था.'

रियल बॉक्स

21वीं सदी की सबसे पसंदीदा फिल्म

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

पुराने फिल्म दर्शकों से यदि यह सवाल किया जाए कि बीते 25 सालों में उनकी सबसे ज्यादा पसंदीदा फिल्म कौन सी है, तो निश्चित रूप से सभी के जवाब एक नहीं होंगे। क्योंकि, फिल्मों को लेकर हर दर्शक का नजरिया अलग होता है। किसी को रोमांटिक फिल्म पसंद है, तो किसी को एक्शन वाली। ऐसे दर्शक भी कम नहीं हैं, जिनकी पहली पसंद सामाजिक कथानकों वाली फ़िल्में होती है। साथ ही कॉमेडी फ़िल्में के मुरीद भी कम नहीं। फ़िल्में मनोरंजन का जरिया जरूर होती है, पर बात सिर्फ वहीं तक सीमित नहीं है। आज के संदर्भ में पसंदीदा फिल्म का नाम तलाशा जाए, तो कारोबारी सफलता और फिल्म देखने वालों की पसंद के आधार पर ये फिल्म है 'थ्री इडियट्स!' इस फिल्म को देश ही नहीं दुनियाभर के दर्शकों ने भी बेहद पसंद किया। आईएमडीबी ने दुनियाभर की 'ग्लोबल टॉप 250' फिल्मों की जो सूची बनाई, उसमें राजकुमार हिरानी की फिल्म 'थ्री इडियट्स' (2009) भी है। आईएमडीबी (इंटरनेट मूवी डाटाबेस) के अनुसार आमिर खान की इस फिल्म को 21वीं सदी की सबसे बड़ी हिट फिल्म माना गया है।

आईएमडीबी की इस रिपोर्ट को 250 मिलियन मंथली यूजर्स से मिले डाटा के आधार पर तैयार किया गया। रिपोर्ट में बताया गया कि 'थ्री इडियट्स' ने अपने वर्ल्डवाइड पेज व्यूज और नॉन-इंडियन व्यूअर्स की इंगेजमेंट के आधार पर यह उपलब्धि हासिल की। स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म जैसे नेटफ्लिक्स और अमेजन प्राइम ने इसे ग्लोबल ऑडियंस तक पहुंचाया, जहां ये नॉन-इंडियन व्यूअर्स के बीच भी छाई रही। 'आईएमडीबी' आज ऐसा प्लेटफार्म बन गया, जो सिनेमा के दर्शकों को बताता है कि सिनेमाघरों और ओटीटी प्लेटफॉर्म पर किन फिल्मों को ज्यादा पसंद किया गया और इन्हें दर्शकों से सबसे ज्यादा रेटिंग मिली। यह भी सच है कि दर्शक इन दिनों फिल्म देखने का फैसला 'आईएमडीबी' रेटिंग के हिसाब से करते हैं। 'आईएमडीबी' ने अपनी पिछले 25 साल की टॉप फिल्मों के बारे में बताया कि 2000 के बाद रिलीज हुई फिल्मों को व्यूज के आधार पर रैंक किया गया है। 130 फिल्मों पर आधारित इस रिपोर्ट में हर साल की 5 फिल्मों को शामिल किया गया था, जिन्हें डेटासेट कहा गया।

'आईएमडीबी' की रिपोर्ट में सबसे बड़ी ब्लॉकबस्टर भारतीय फिल्म '3 इडियट्स' को चुना गया। यह फिल्म इंजीनियरिंग कॉलेज के कैंपस में स्टूडेंट्स की जिंदगी, उनकी दोस्ती और भविष्य के सपनों की कहानी पर बनी है। फिल्म के नायक आमिर खान हैं, जिन्हें इंडस्ट्री का 'मिस्टर परफेक्शनिस्ट' कहा जाता है। आमिर खान ने अपनी फिल्मों से हमेशा दर्शकों को चौंकाया है। उनकी इस फिल्म ने 21वीं सदी में हिंदी फिल्मों में दूसरों के मुकाबले सबसे ज्यादा सफलता पायी। 'ग्लोबल टॉप 250' फिल्मों की लिस्ट में इस फिल्म को 85 वें स्थान पर जगह मिली, जो किसी भी भारतीय फिल्म के लिए अभी तक की सबसे ऊंची रैंक है। सामान्यतः अमिताभ बच्चन, शाहरुख़ खान, सलमान खान और रणबीर कपूर जैसे सितारे फिल्मों में छाए रहते हैं। इनके मुकाबले आमिर खान बेहद सीमित और चुनिंदा फ़िल्में करते हैं। पर, उनकी इस फिल्म ने सभी सितारों को पीछे छोड़ दिया। यही वजह है कि ये फिल्म 21वीं सदी की सबसे पॉपुलर और सबसे ज्यादा देखी जाने वाली भारतीय हिंदी फिल्म बन गई। विदेशी दर्शकों के बीच इस फिल्म की दीवानगी इतनी है कि यह इंटरनेट पर हर साल ट्रेंड कर जाती है। चीन, ताइवान, साउथ कोरिया और मिडिल ईस्ट जैसे सिनेमा मार्केट में भी 'थ्री इडियट्स' को दर्शकों का प्यार मिला। चीन में तो यह अभी तक की सबसे ज्यादा हिट इंडियन फिल्म साबित हुई है।

चेतन भगत के उपन्यास 'फाइव पॉइंट समवन' पर आधारित राजकुमार हिरानी की यह फिल्म 2009

में रिलीज हुई थी। इसमें आमिर खान ने सिस्टम के खिलाफ बगावत का प्रतीक बन गए 'रैंचो' का किरदार निभाया। '3 इडियट्स' की सफलता का पैमाना इतना हाई है, कि इसने आमिर की दूसरी फिल्मों जैसे तारे जमीं पर, माय नेम इज खान, साथ ही 'मॉनसून वेडिंग' को भी पीछे छोड़ा। ये फिल्में इंटरनेशनल ऑडियंस में भी पॉपुलर रहीं। लेकिन, इसका स्कोर 60 से नीचे रहा। आमिर की फिल्मों का क्रॉस-कल्चरल अपील ही उन्हें 'ग्लोबल स्टार' बनाता है। दरअसल, इस फिल्म ने साबित किया कि अगर कहानी में दम हो और उससे मिलने वाला संदेश सही हो, तो फिल्म को सफल होने से रोका नहीं जा सकता। '3 इडियट्स' के बारे में कहा जाता है कि यह सिर्फ फिल्म नहीं, एक इमोशन है!' फिल्म में आमिर के साथ आर माधवन, शरमन जोशी, करीना कपूर, बोमन ईरानी और ओमी वैद्य ने अपने अभिनय से जान डाल दी।

यह फिल्म क्रिटिकल और कमर्शियल दोनों रूप से जबरदस्त हिट रही। बॉक्स ऑफिस पर 200 करोड़ से ज्यादा की कमाई की और कई अवॉर्ड झटके। फिल्म ने दुनियाभर में करीब 400 करोड़ से ज्यादा की कमाई की। अपने समय काल में यह फिल्म इंडस्ट्री की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्म बनी थी। इस फिल्म की एक सबसे बड़ी खासियत यह भी रही कि इसके डायलॉग ने दर्शकों को बहुत प्रभावित किया। आल इज वेल, सफलता के पीछे मत भागो, काबिलियत बढ़ाओ ... सफलता ज़रूर तुम्हारे पीछे आएगी' जैसे प्रभावशाली डायलॉग आज भी युवाओं के लिए सफलता का मंत्र बने हैं। इस फिल्म को उस साल बेस्ट फिल्म सहित 6 फिल्मफेयर अवार्ड मिले थे।

2020 से 2025 तक रिलीज हुई टॉप फिल्मों की लिस्ट पर नजर डालें, तो इसमें बड़े सुपरस्टार की फ़िल्में कम ही है। 2020 में जहां सुशांत सिंह राजपूत की 'दिल बेचारा' ने बाजी मारी, वहीं 2021 में साउथ के सितारे अल्लू अर्जुन की 'पुष्पा' टॉप पर रही। 2022 में कन्नड़ कलाकार यश की केजीएफ चैप्टर 2, 2023 में रणबीर कपूर की 'एनिमल' टॉप पर रही। जबकि, 2023 में शाहरुख खान की तीन फिल्में पठान, जवान और 'डंकी' रिलीज हुई। 2024 में अल्लू अर्जुन की 'पुष्पा 2' टॉप पर रही, जिसने बॉक्स ऑफिस पर भी धुआंधार कलेक्शन किया। 'आईएमडीबी' की लिस्ट में 2000 से 2004 तक लगातार शाहरुख की फिल्मों का कब्जा रहा। 2000 में मोहब्बतें, 2001 में कभी खुशी कभी गम, 2002 में देवदास, 2003 में कल हो न हो और 2004 में वीर जारा ने टॉप पर रहीं। इसके अलावा इस लिस्ट में आमिर खान की तारे जमीन पर (2007), 3 ईडियट्स (2009), पीके (2014), दंगल (2016) जैसी फिल्में भी रिलीज ईयर के हिसाब से टॉप पर रहीं।

बीते 25 सालों में टॉप पर रहने वाली फिल्मों की लिस्ट इस प्रकार रही। मोहब्बतें (2000), कभी खुशी कभी गम (2001), देवदास (2002), कल हो न हो (2003), वीर-जारा (2004), ब्लैक (2005), धूम-2 (2006), तारे जमीं पर (2007), रब ने बना दी जोड़ी (2008), 3 इडियट्स (2009), माय नेम इज खान (2010), जिंदगी न मिलेगी दोबारा (2011), गैंग्स ऑफ वासेपुर (2012), द लंचबॉक्स (2013), पीके (2014), बाहुबली (2015), दंगल (2016), बाहुबली-2 (2017), केजीएफ (2018), उरी (2019), दिल बेचारा (2020), पुष्पा-1 (2021), केजीएफ-2 (2022), एनिमल (2023), पुष्पा-2 (2024) और सैयारा (2025)

'आईएमडीबी' की रिपोर्ट में साल 2000 से 2025 की सबसे पॉपुलर फिल्मों के बारे में बताया गया। खास बात यह कि 2025 में अक्षय कुमार-अरशद वारसी की 'जॉली एलएलबी', ऋतिक रोशन-जूनियर एनटीआर की 'वॉर 2' और रजनीकांत की 'कुली' जैसी फिल्में रिलीज हुईं। लेकिन, इन तमाम बड़े सितारों की फिल्म को एक नए एक्टर की फिल्म सैयारा' ने पछाड़ दिया। इसके साथ अहान पांडे ने डेब्यू किया है। 'सैयारा' ने इस लिस्ट में विक्की कौशल की 'छावा' को पछाड़ा है, जो लिस्ट में दूसरे नंबर पर रही। इस साल की टॉप फिल्मों की लिस्ट में महावतार नरसिम्हा तीसरे, ड्रैगन चौथे और सुपरस्टार रजनीकांत की 'कुली' पांचवे नंबर पर रही।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

प्रार्थना सभा में आंखों में नमी, चेहरे पर तनाव

धर्मेंद्र के निधन के बाद उनकी प्रार्थना सभा ने पूरे फिल्म जगत को भावुक कर दिया। लेकिन, सबसे ज़्यादा ध्यान खींचा उनके बेटों सनी देओल और बॉबी देओल के चेहरे पर दिखा गहरा दुख और हिम्मत का मिला-जुला भाव। मुंबई के बांद्रा स्थित ताज लैंड्स एंड के 'सीसाइड लॉन्स' में रखी गई, इस सभा को परिवार ने 'सेलिब्रेशन ऑफ लाइफ' नाम दिया, जहां सितारे और फैन्स के साथ दिवंगत स्टार को अंतिम विदाई देने पहुंचे। पूरे कार्यक्रम के दौरान सनी और बॉबी बार-बार लोगों से मिलकर धन्यवाद करते रहे, लेकिन आंखों की नमी और भारी चेहरा साफ बता रहा था कि वे अंदर से कितने टूटे हुए हैं।

इस प्रार्थना सभा में बॉलीवुड के कई बड़े सितारे जैसे शाहरुख खान, सलमान खान, रेखा, माधुरी दीक्षित और अन्य कलाकार पहुंचे, जिन्होंने धर्मेंद्र की याद में भावुक होकर श्रद्धांजलि दी। मंच पर रखी गई उनकी बड़ी तस्वीर के चारों ओर फूलों की सजावट, शांति भरे भजन और एक म्यूज़िकल ट्रिब्यूट के जरिए उनके सुनहरे करियर और सादगी भरे व्यक्तित्व को सलाम किया गया। परिवार के सदस्य, खासकर पोते करन देओल, दादा की तस्वीर के सामने सिर झुकाकर बैठते नज़र आए, मानो बीते सालों की सारी यादें उस एक पल में सिमट आई हों।

इधर, हेमा मालिनी ने भी अपने पति के लिए अलग से एक प्रेयर मीट अपने घर पर आयोजित की, जहां उनके करीबियों और रिश्तेदारों ने शांत माहौल में धर्मेंद्र के लिए प्रार्थना की। इस सभा में बेटी ईशा देओल के एक्स-हज़्बंड भरत तख्तानी तक पहुंचे, जो इस बात का संकेत था कि दुख की घड़ी में सारे मतभेद और दूरियां पीछे छूट जाती हैं। हेमा मालिनी ने सोशल मीडिया पर भी एक भावनात्मक नोट लिखकर धर्मेंद्र को अपना 'सब कुछ' बताते हुए कहा कि उनकी कमी जिंदगी भर महसूस होगी, लेकिन वे उनकी यादों और सीखों के सहारे आगे बढ़ेंगी।

दोनों प्रेयर मीट्स ने यह साफ कर दिया कि धर्मेंद्र भले ही दो परिवारों के बीच बंटा हुआ रिश्ता जीते रहे हों, लेकिन प्यार और इज़्ज़त के मामले में वे सभी के लिए एक समान रहे। सनी-बॉबी की शोक सभा में उमड़ी स्टारों की भीड़ हो या हेमा मालिनी के बंगले में आयोजित शांत, सुकून भरी प्रार्थना हर जगह एक ही बात महसूस हुई कि 'ही-मैन' सिर्फ बड़े परदे का नहीं, असल ज़िंदगी का भी हीरो था, जिसने हर दिल पर अमिट छाप छोड़ी है।

'एक था धरम-एक था देव' दोनों के रिश्तों की दास्तां

अशोक जोशी

'देव और धरम, धरम और देव' यह कहने और सुनने में दो नाम लगते हैं। लेकिन, इन दो नामों के पीछे किसी थ्रिलर फिल्म की तरह रोमांचक संबंध है। कहने को यह भी कहा जाता है कि हिंदी सिनेमा के पहले धरम थे धर्मेन्द्र। पर, यह भी सही नहीं है। क्योंकि,

हिन्दी सिनेमा के पहले धरम थे देव आनंद और उनका असली नाम धर्म देव आनंद था। धर्मेन्द्र तो उनके बहुत बाद फिल्मों में आए। इसके बावजूद इसके देव आनंद और धर्मेंद्र के न केवल नाम में साम्यता थी, बल्कि बहुत कुछ ऐसी बातें थी जो दोनों में कॉमन थी और दोनों को एक दूसरे से जोडती भी थी।

धर्मेंद्र और देव आनंद दोनों ही हिंदी सिनेमा के सदाबहार अभिनेता थे। दूसरी बात दोनों में किसी तरह की बनावट नहीं थी। दोनों ही दर्शकों और मिलने वालों से बिना किसी के मिलने में विश्वास रखते थे। दोनों में ही पंजाब की मिट्टी की सुगंध थी। धर्मेन्द्र का जन्म देव आनंद की पुण्यतिथि 2 दिसम्बर के एक सप्ताह बाद 8 दिसम्बर को हुआ था और धर्मेन्द्र की मृत्यु देव आनंद की पुण्यतिथि से एक सप्ताह पहले 24 नवम्बर को हुई। यही नहीं दोनों एक ऐसे चेहरे के मालिक थे जिसे देखकर फिल्मी दुनिया के दूसरे सितारे यह चाहत रखते थे कि काश उनका चेहरा भी इतना खूबसूरत होता। दिलीप कुमार जैसी हस्ती खुद स्वीकारती थी, कि उनके जमाने के सबसे खूबसूरत हीरो देव आनंद थे। जब दिलीप कुमार ने धर्मेन्द्र को देखा, तब भी यही कहा था काश! खुदा उन्हें यह सूरत बख्शता!

इतना ही नहीं धर्मेंद्र और देव आनंद के बीच एक ऐसा संबंध था, जिसकी जानकारी कम ही लोगों को है। धर्मेन्द्र जिस प्रतियोगिता के माध्यम से फिल्मों में आए उसकी चयन समिति के सदस्यों में एक थे देव आनंद के बड़े भाई चेतन आनंद थे, जिन्होंने उन्हें अपनी महत्वकांक्षी फिल्म 'हकीकत' में नायक की भूमिका दी थी। देव के छोटे भाई विजय आनंद से भी उनकी पटरी खूब बैठती थी। विजय आनंद ने अपनी फिल्म 'ब्लैकमेल' में धर्मेंद्र से न केवल बेहतरीन काम करवाया, बल्कि पल पल दिल के पास में उन्होंने धर्मेंद्र को कुछ इस अंदाज में पेश किया था कि दर्शक आज भी उसे भुलाए नहीं भूलते। इसके बाद विजय आनंद ने धर्मेन्द्र को राम बलराम और राजपूत में भी निर्देशित किया था।

वह देव आनंद ही थे, जिन्होंने सबसे पहले धर्मेन्द्र को केवल देखकर की भविष्य का सितारा होने की भविष्यवाणी की थी। बात उन दिनों की है, जब धर्मेन्द्र फिल्मों में नए आए थे और अपनी पहचान बनाने के लिए संघर्ष कर रहे थे। तब तक देव आनंद सदाबहार स्टार बन चुके थे। एक बार फिल्म निर्माता निर्देशक रमेश सहगल ने अपनी एक फिल्म की कहानी सुनाने देव आनंद को अपने ऑफिस में बुलाया था। जब देव आनंद वहां पहुंचे तो उन्होंने देखा कि रमेश सहगल के ऑफिस के कैंपस में कलाकारों की लाइन लगी थी, जिन्हें यह पता चला था कि रमेश सहगल अपनी नई फिल्म बना रहे है। यह सभी कलाकार एक रोल के लिए लाइन में लगे अपनी बारी की प्रतीक्षा कर रहे थे। तभी देव आनंद उस लाइन के पास से गुजरे। कुछ दूर पर जाकर वह पलटे और एक

संघर्षरत कलाकार के कंधे पर हाथ रखकर बोले 'तुम में कुछ बात है। तुम जल्द ही बड़े स्टार बनोगे।' वह युवक और कोई और नहीं बल्कि धर्मेन्द्र थे।

सुनने में तो धर्मेंद्र को यह बात अच्छी लगी कि देव आनंद जैसा सितारा उनके लिए यह टिप्पणी कर रहा है। लेकिन, उन्हें यकीन हो गया कि जिस फिल्म के लिए देव आनंद को बुलाया गया, उसमें उसका चयन तो नामुमकिन है। वह हताश होकर लाइन में लगे रहे। देव आनंद जब रमेश सहगल के ऑफिस में पहुंचे तो रमेश सहगल ने उन्हें एक कहानी सुनाई। कहानी देव आनंद को पसंद भी आई। लेकिन, उन्होने रमेश सहगल से कहा कि रमेश, तुम जिस तरह की फिल्म बना रहे हो, वह मेरे इमेज के हिसाब की नहीं है। इसमें उदासी और संघर्ष के रंग हैं। मैं तुम्हारी फिल्म नहीं कर रहा। लेकिन, तुम्हें एक ऐसे अभिनेता से मिलवाता हूँ जो इस भूमिका के लिए एकदम फिट रहेगा। रमेश सहगल देव आनंद की बात टाल भी नहीं सकते थे। देव आनंद ने बाहर लाइन में लगे धर्मेन्द्र को बुलाया। उनके चेहरे से संघर्ष के भाव झलक रहे थे। रमेश सहगल की तरफ मुखातिब होकर देव आनंद ने कहा यह है तुम्हारा असली हीरो। रमेश सहगल को भी धर्मेन्द्र का चेहरा अपनी फिल्म के संघर्षरत नायक की तरह लगा और धर्मेन्द्र को यह फिल्म मिल गई। यह फिल्म थी 'शोला और शबनम' जिसने पहली बार धर्मेन्द्र को पहचान प्रदान की।

इसी दौरान देव आनंद नटराज स्टूडियो में शूटिंग कर रहे थे। वहां धर्मेन्द्र की एक फिल्म की शूटिंग चल रही थी। लंच के दौरान धर्मेन्द्र देव आनंद से औपचारिक मुलाकात करने गए। लंच टेबल पर बैठे देव आनंद ने धर्मेन्द्र से कहा बातें तो होती रहेगी। पहले मेरे साथ लंच कर लो। यह सुनकर धर्मेन्द्र को विश्वास नहीं हुआ कि देव आनंद जैसा सितारा उन्हे लंच ऑफर कर सकता है। वह शर्माते हुए बैठकर देव आनंद के साथ लंच करने लगे। इसी बीच जब उन्हें प्यास लगी तो उन्होंने टेबल पर रखे पानी के एक गिलास को उठाने की कोशिश की तो देव आनंद ने उन्हें रोक दिया। उन्होंने अपने आइस बॉक्स से पानी की एक ठंडी बोतल निकाल कर धर्मेन्द्र को पीने को दी। धर्मेन्द्र ने एक साक्षात्कार के दौरान बताया था कि जीवन में पहली बार उन्होंने आइस बाक्स और ठंडे पानी की बोतल देखी थी।

जब धर्मेन्द्र सितारा बने तो उन्होंने देव आनंद से अपना वैसा ही संबंध बनाए रखा। दरअसल, वह देव आनंद को अपना बड़ा भाई मानते थे। जिन दिनों देव आनंद 'हरे राम हरे कृष्ण' का निर्माण कर रहे थे। शिवसेना की फिल्म इकाई ने यह नियम बना रखा था कि कोई भी अभिनेता या अभिनेत्री एक ही समय में छह से ज्यादा फिल्में नहीं कर सकता है। फिल्म की नायिका मुमताज छह फिल्मों में काम कर रही थी। जब 'हरे राम हरे कृष्ण' की शूटिंग के लिए काठमांडू जाने के लिए मुंबई एयरपोर्ट पर पहुंची तो शिवसैनिकों ने उनका रास्ता रोक लिया। जब धर्मेन्द्र को यह बात पता लगी तो वह फौरन एयरपोर्ट पहुंचे और शिवसैनिकों से भिड लिए। कहने लगे यह नियम भारत में लागू होता है नेपाल पर नहीं। देव साहब मेरे बड़े भाई हैं देखता हूं, उनकी शूटिंग के लिए कौन विरोध करता है। उन्होने शिवसैनिकों को हटाकर मुमताज को काठमांडू के लिए रवाना किया।

धर्मेन्द्र ने सलीम खान से साढ़े 17 हजार में फिल्म 'जंजीर' की कहानी खरीदी थी। जब फिल्म बनाने की बात आई तो उनकी एक बहन ने उनसे कसम ली की वह प्रकाश मेहरा की फिल्म में काम नहीं करेंगे। क्योंकि, प्रकाश मेहरा उनकी एक फिल्म करने से इंकार कर चुके थे। धर्मेन्द्र ने जहां अपनी बहन को दिया वायदा निभाया, वहीं प्रकाश मेहरा को यह कहकर 'जंजीर' के लिए देव आनंद का नाम सिफारिश की, कि इसकी कहानी देव साहब की सीआईडी से मिलती है इसलिए वह सबसे ज्यादा फिट रहेंगे। प्रकाश मेहरा ने उनके कहने पर देव आनंद से सम्पर्क भी किया। लेकिन, फिल्म में हीरो पर एक भी गाना न होने के कारण देव आनंद ने मना कर दिया। इसके बाद फिल्म राजकुमार से होते हुए फिल्म अमिताभ तक पहुंची।

धर्मेन्द्र खुद देव आनंद के इतने मुरीद थे कि वह अक्सर अपनी फिल्मों में देव आनंद का जिक्र कर दिया करते थे। उन्होंने 'रिटर्न आफ ज्वेल थीफ' केवल इसलिए की, क्योंकि इसमें उन्हें देव आनंद के साथ काम करने का मौका मिला था। आए दिन बहार की एक सिचुएशन पर जब आशा पारेख लड़का बनकर आती है तो धर्मेन्द्र उससे कहते हैं तुम्हारी आंखें देव आनंद की तरह है। फिल्म 'गुड्डी' में भी एक जगह वह ड्राइवर बनकर जया भादुड़ी के साथ असली नकली का गाना 'तुझे जीवन की डोर से बांध लिया है' गाते दिखाई देते है। हाल ही में आयी धर्मेन्द्र की फिल्म 'रॉकी और रानी की प्रेम कहानी' में भी वे शबाना आजमी को देखकर देव आनंद की फिल्म 'हम दोनों' का गीत 'अभी न जाओ छोड़कर' गाते-गाते खुद अपने प्रिय हम नाम देव आनंद की दुनिया में पहुंच गए।

पहचाना जाना ही सही मायने में पुख्ता पहचान

विचार
विवेक कुमार मिश्र
लेखक हिंदी के प्रोफेसर हैं।

परिचित संसार ही सबकुछ नहीं होता न ही परिचय क्षेत्र हमारे होने का पूरा परिचय देते हैं। अक्सर जो परिचय दिया जाता है वह अधूरा ही होता है, बहुत सारा परिचय तो केवल इस बात का ही होता है कि ये फलां साहब के पुत्र हैं ये फलां जगह से आते हैं और आदमी इस परिचय को लेकर टुकुर-टुकुर ताकता रहता है। यह उसका परिचय ही नहीं है, फिर वह कहता है कि वह कवि है, थोड़ी देर बाद कहता है कि वह लेखक है फिर थोड़ी देर बाद कहता है कि वह चित्रकार है और इन सबके साथ वह आदमी है। आदमी होने का परिचय अक्सर उसके व्यवहार से मिलता है जो संसार में है और जो संसार में रहेगा उसका स्वाभाविक रूप से एक व्यवहार होगा । एक दुनिया होगी जिसमें वह केवल अपने व्यवहार से अपने द्वारा किए गए कार्यों से ही जाना जाता है। यह जाना जाना ही सही मायने में आदमी की एक पुख्ता पहचान होती है। इस पहचान के साथ ही आदमी जीवन जीता है, जीने का आनंद भी इसी दिशा में आता है। परिचय की दुनिया में आदमी अक्सर अपनी प्रतिभा का परिचय दे नहीं पाता, बहुत कुछ जो करना होता है वह उसे कर भी नहीं पाता। परिचय हमें संकुचित कर देता है वहां हम केवल पहचान और रिश्तों को खोजने और निभाने में ही रह जाते हैं इससे आगे क्या कुछ करना है यह हम सोच ही नहीं पाते। परिचय का संसार केवल आपकी उस उपस्थिति का संसार भर होता है जिसमें आप बिना किसी प्रयास के ही होते हैं। यहां होना न होना कोई मायने नहीं रखता। आप हैं तो हैं और नहीं हैं तो उसका भी कोई खास अर्थ नही बनता। यह होना न होना अस्तित्व की कहानी को प्रकट नहीं करता इससे केवल इस बात का पता चलता है कि आप हैं और आप वही हैं जो आप हैं और जो आपको होना था। इस तरह से होने में किसी प्रकार की संभावना के लिए कोई जगह नहीं होती। यह परिचय का संसार हमारी दुनिया को बस हमारी वाली दुनिया बनाकर रखता है, इस दुनिया में किसी तरह का कोई खतरा नहीं होता, जिन्हें कुछ नहीं करना होता है उनके लिए यह परिचय का संसार ही सबकुछ होता है और वे लोग इस दुनिया से कभी निकल ही नहीं पाते। परिचय के संसार में परिचित दुनिया को जीना बस जीने भर की जीवन की कहानी होती है। यह उन लोगों की कहानी होती है जिन्हें किसी तरह का कोई रिस्क नहीं लेना होता है। ये लोग हमेशा सेफ जोन में चलते हैं। दुनिया को जीने के लिए एक आधार और परिचय लेकर चलते रहते हैं कोई नई दुनिया इन्हें बनानी ही नहीं होती न ही नये तरीके से ये रहना चाहते हैं। इनके लिए दुनिया का अर्थ ही इतना भर होता है कि जो हमारे पुरखों ने किया वहीं हमें करना है, इससे एक कदम आगे नहीं बढ़ना है। यदि कुछ कदम पीछे ही रह गये तो इसे वह एक आदर्श के रूप में प्रस्तुत करते हैं। दुनिया को इस तरह बिना किसी परिवर्तन के ऐसे लोग स्वीकार करते हैं और इनका परिवर्तन भी ऐसा होता है कि उसमें किसी भी तरह का कोई परिवर्तन नहीं मिलेगा। संसार का परिचय ही काफी नहीं होता न ही परिचय क्षेत्र में होने से किसी भी व्यक्ति का व्यक्तित्व निर्मित होता है। व्यक्तित्व के विकास के लिए सहज रूप से आपको आगे आना पड़ता है और इस तरह से अपनी उपस्थिति दर्ज करानी पड़ती है कि आपको हर व्यक्ति अर्थ की तरह से देखें। आपका होना उस समय और समूह में कुछ जोड़ता हो तो इससे आपका व्यक्तित्व आकार लेता है। कभी भी किसी के लिए भार स्वरूप नहीं आना चाहिए न ही किसी को अपने भार का अहसास कराया जाना उचित है। संसार का परिचय जितना सघन होता है उतना ही आपका संसार बड़ा और व्यक्तित्व के विस्तार की बात सामने आती है। व्यक्तित्व बड़ा होगा तो परिचित संसार से बाहर की दुनिया सम्मान करती है और परिचय का क्षेत्र बढ़ता जाता है, इतना ही नहीं जो परिचित होते हैं वे दूर कहीं छिटकते जाते हैं यहां तक कि परिचित संसार से बहुत तीखी प्रतिक्रिया आती है और आनी भी चाहिए क्योंकि उन्हें बराबर से यहीं लगता है कि ये तो मेरे साथ ही थे और ऐसा क्या कर लिया जो लोग-बाग इनकी इज्जत करते हैं या जगह जगह पर इन्हें ही

सम्मान दिया जाता है। परिचय का संसार संकुचन का शिकार हो जाता है। संकुचित होते संसार से बाहर निकलने का साहस भी होना चाहिए और परिचय के बाहर निकल कर अपरिचित संसार में परिचय की कड़ियों को जोड़ना एक तरह से जीवन की बड़ी कला है। परिचित संसार भी उस समय खुश होने की नहीं स्थिति में आ जाता है जब देखता है कि आप कहां तक जा सकते हैं और कहां तक जाते हैं । हमारी बाहें यदि आसमान के विस्तार को समेटने की शक्ति यदि हासिल कर लेती हैं तो यह केवल अकेले का प्रयास भर नहीं होता उसमें वे सब होते जो कभी भी एक कदम आपके साथ चलें होते हैं। सबके साथ चलते हुए ही जीवन की गति को विस्तार दिया जा सकता है। परिचित और अपरिचित संसार मिलकर एक साथ हमारी दुनिया को रचने का काम करते हैं पर आदमी हमेशा ही यह भूल जाता है कि वह आज जहां है वहां तक कैसे पहुंचा और जो लोग अपनी हर गति को याद रखते हैं और संभाल कर रखते हैं अपनी यात्रा के चिह्न उन सबकी वजहों से ही यह दुनिया सुंदर बनती है। इस दुनिया को सुंदर बनाने में परिचय और अपरिचय का संसार एक संकल्प लेकर चलता है। हमारी हर उपलब्धि में परिचित और अपरिचित की दुनिया एक साथ कार्य करती है। हमें सबसे पहले अपने काम पर फोकस करना चाहिए। कार्य ही हमारी दुनिया और परिणाम तथा व्यक्तित्व होता है। सारी दुनिया कार्य और परिणाम के रूप में सफलता देखती है जो अंत में आती है। उसके पीछे दुनिया कैसे चल रही थी इसे कोई नहीं देखता।

रिटायर्डमेंट की उम्र और अंतिम सांस तक मेहनत

...और क्या कह रही है जिंदगी
ममता तिवारी
लेखिका साहित्यकार हैं।

हमारे भारत में रिटायर्डमेंट का मतलब होता है व्यक्ति का बूढ़ा हो जाना और ये तय कौन करता है कि व्यक्ति बूढ़ा हो गया ज़ाहिर सी बात है सरकारी संस्थानों में सेवानिवृत्ति की बात कर रही हूँ जहाँ उम्र की गिनती निर्धारित कर दी गई है कि अब आप कार्य करने लायक नहीं रहे ये कैसे निर्धारित होता है कि व्यक्ति का मस्तिष्क जिसकी काम में सबसे ज़्यादा आवष्यकता होती है मेरी नज़रो में वो बुद्धिजीवी, ऊर्जावान, अपडेट बुजुर्ग दिखे जो अभी भी काम में चुस्त थे पर चूंकि शारीरिक उम्र सरकारी हिसाब से पूर्ण हो चुकी है तो उन्हें काम बंद करना पड़ेगा चाहे आपके संस्थान में अभी उनकी जगह भरने वाला कोई योग्य व्यक्ति आया भी नहीं पर उन्हें तो बस रिटायर्ड करना है।

केंद्र सरकार 60, राज्य सरकार 60, 62 निजी क्षेत्र में 58 से 60 (ये कंपनी के नियमों से भी तय होता है, सषस्त्रबल रैंक और सेवा अवधि के आधार पर 54 से 60 के बीच सेवानिवृत्त होते है।) वित्तीय स्वतंत्रता, जल्दी सेवानिवृत्ति (फायर) आंदोलन युवा पेशेवरो के बीच लोकप्रिय हो रहा है। वीआरएस शीघ्र सेवानिवृत्त योजना जो स्वेच्छा से होती है ये व्यक्ति का व्यक्तिगत निर्णय होता है। पर कई बार वी.आर.एस. सार्वजनिक और निजी क्षेत्र की कंपनियों द्वारा अतिरिक्त कर्मचारियों को कम करने, लागत में कटौती या मानवीय और कानूनी तरीके से संचालन को पुर्नगठित करने के लिये पेष किया जाता है जिसे ''गोल्डन हैंडशेक'' कहा जाता है इसमें पात्रता के हिसाब से पेंशन और एकमुश्त राशि को उस व्यक्ति को दिया जाता है जिसे कंपनी स्वेच्छा से सेवामुक्त कर देती है अब नवोदय जैसे विद्यालय के कर्मचारी जो महत्वपूर्ण पदों से रिटायर्ड किये जाते है उन्हें पेंषन की कोई सुविधा प्राप्त नहीं है ऐसे लोग बुद्धि से रिटायर्ड नहीं होते है पर पेंशन से वंचित रहते है इस बारे में मानव संसाधन को विचार करना चाहिये या उनकी कार्यअवधि बढ़ाई जानी चाहिये। हालांकि शिक्षको, नर्सिंग कर्मियों स्वास्थ्य विभागो प्रधानाचार्यो की उम्र अब सरकारी संस्थानों में 62 से 65 कर दी गई है।

जहाँ तक अब मैं उम्रदराज होने के बाद अपने चारो तरफसेवानिवृत्त लोगो से घिरी हूँ और वे सब दिमाग से चुस्त, शरीर से फिट है क्या सरकार के पास इन लोगो की प्रतिभा का मूल्यांकन करने का कोई उपाय नहीं जबकि न्याय से लेकर हर विभाग में योग्य व्यक्तियों की कमी से काम रूके पड़े है न्यायालय में तो सालों पुराने केस पड़े है तो क्या रिटायर्डमेंट के बाद न्यायाधीशों का दिमाग एकदम काम करना बंद कर देता है? वकील, डॉक्टर ऐसे पेशेवाले लोग हैं जो ताउम्र काम करते है उनका दिमाग भी सही चलता है। और अगर दिमाग सही चलता रहेगा तो बुजुर्ग डीमेंशिया अल्ज़ायमर्स जैसी बीमारियों से बचेंगे। घर में भी कहा जाता है अब आप रिटायर्ड हो गये है (एक दिन में) घर में बैठिये पेपर पढ़िये, भजन संत्संग कीजिये, नाती पोतों को देखिये अगर उन्हें इसमें दिलचस्पी नहीं है तो ? हमारे देश में अच्छे अच्छे चतुर लोग रिटायर्डमेंट के बाद अवसाद में चले जाते हैं।

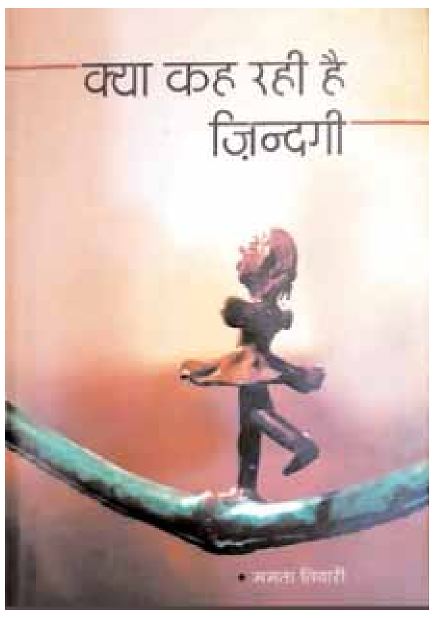

सरकार को चाहिये एक बड़ा संस्थान बनायें जिसमें अलग-अलग विभाग हो जैसे लोन कैसे मिले, केस कैसे दायर करे, गरीबों महिलाओं बच्चों के लिये योजनाये उफ़्फ़ बहुत सारी बातें है जिन्हें आम नागरिक को नहीं पता होता तो ऐसे लोगो की कांउसिलिग के लिये अलग अलग विभाग में 60 से ऊपर बुद्धिमान, रिटायर्ड, व्यक्तियों को बिठाया जाये जो जनता को अपने अनुभव से उनके अधिकार बतायें अभी फिलहाल ये योजना मेरे दिमाग में भी चल रही है। युवाओं को रोजगार के बारे में बताया जाये

पर अब उस मन का क्या करे जो दिल से बूढ़ा नहीं होता डाक्टर भी मानते हैं मन को दिमाग को काम में लगाये रखो कुछ लोग अकेले रह गये है तो समाज के डर से महिला, पुरूष मित्र नहीं बना सकते, विवाह नहीं कर सकते जनाब मन की कोई उम्र होती है वो तो अभी भी बच्चा है जी........

कैसे कह दूँ......
मन निर्विकार हो गया
उम्र के साथ अंदर सब सो गया
अब भी तो ठंडी रातों में
गरम कपड़ों के बिना घूमने को जी करता है
पहले बड़ा निडर था ये दिमाग
अब हर बात पे दिल डरता है
तो क्या सर्द रातों में कंबल ओढ़े पड़ी रहूँ ?
चल सकते है हाथ-पैर
उम्र का ख्याल कर इक जगह गड़ी रहूँ....
ढलना है काम उसका
उम्र को तो ढलना होगा।
थोड़ा धीमे सही
चलना होगा।

बैठ गई सुस्ताने को तो,
शायद कदम सुस्त हो जायें
चलने के ख्याल से ये
दिल दिमाग दुरुस्त हो जाये
झूलों पे बैठ मन बच्चा
नदियाँ किनारे दिल जवाँ हो जाये
पहाड़ों की शामों में लौट आये मदहोशियाँ
ख़्यालों में रूमानियत को पलना होगा
सरगोशियां
थोड़ा धीमें सही.... चलना होगा
मैं ज़मीं पे चलते चलते
अब भी आसमाँ तकती हूँ
गहरी नींदों में सरपट रास्तों पे
दौड़ती उतरती हूँ
इस राख के ढेर में दबे शोलों से
अब भी कुछ चराग रौशन हुआ चाहते हैं
मुझे तो अभी जलना होंगा
थोड़ा धीमे सही, चलना होगा
मुझे अभी चलना होगा।

सबसे महत्वपूर्ण बात जो सबको जानना ज़रूरी है क्या कभी सोचा है एक व्यक्ति मरते दम तक बूढ़ा नहीं होता काम में लगा रहता है पर आप उसे मूर्ख समझते हैं। जी हाँ, मैं बात कर रही हूँ होम मेकर (गृहिणी) की जो अंतिम सांस तक सक्रिय रहती है क्या आपने कभी उससे पूछा है कभी और क्या कह रहीं है ज़िंदगी।

शीत में दुबकी सांझ

फोटो: ऋतुराज बुड़ावनवाला

हेडफोन की आदतें और बिगड़ता स्वास्थ्य

शोर में जीवन
संध्या राजपुरोहित
लेखक सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

आधुनिक जीवन की गति इतनी तीव्र हो चुकी है कि व्यक्ति अपने ही भीतर सिमटने लगा है। हेडफोन आज हर उम्र के हाथ में दिखते हैं सड़क पर चलते हुए, बस में बैठेया रात की नीरवता में मोबाइल स्क्रीन के सामने। संगीत, पॉडकास्ट, गेम या रील यह सब अब हमारे कानों की दुनिया में स्थायी रूप से बस चुके हैं। पर क्या हम यह समझ रहे हैं कि यह सुविधा धीरे-धीरे हमारे स्वास्थ्य, व्यवहार और संवेदनशीलता को निगल रही है?

तकनीक ने मनुष्य के जीवन को अत्यंत सुविधाजनक बना दिया है। मोबाइल, लैपटॉप और इंटरनेट ने हमें आपस में जोड़ा है, दुनिया को हमारी हथेली पर ला खड़ा किया है। परंतु इस सुविधा के साथ एक अदृश्य खतरा भी धीरे-धीरे हमारे स्वास्थ्य को घेरे में ले रहा है और वह है हेडफोन का बढ़ता उपयोग। आज हेडफोन आधुनिक जीवन का प्रतीक बन चुके हैं। चाहे यात्रा हो या व्यायाम, ऑनलाइन क्लास हो या दफ्तर की मीटिंग, हर उम्र का व्यक्ति इनसे जुड़ा है। यह आवश्यकता धीरे-धीरे एक आदत में और फिर लत में बदलती जा रही है। भारत सहित पूरी दुनिया में हेडफोन का बाजार लगातार बढ़ रहा है।

कभी गाँवों में पत्तों की सरसराहट, पक्षियों की चहचहाहट और बहते पानी की ध्वनि मन को शांति देती थी। आज इन प्राकृतिक स्वरों की जगह इलेक्ट्रॉनिक बीट्स ने ले ली है। हमारी पीढ़ी वह संगीत सुन रही है जो सुकून नहीं देता, बल्कि उत्तेजना पैदा करता है। यह एक ऐसी स्थिति है जहाँ शोर अब मनोरंजन नहीं, बल्कि निर्भरता बन चुका है। आज जब हर जगह तेज़ आवाज़ों का साया फैला है, तब यह समझना जरूरी है कि यह 'मौन खतरा' हमारी पीढ़ी को भीतर से कमजोर कर रहा है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) की एक अन्य रिपोर्ट के अनुसार, विश्व भर में लगभग1 अरब से अधिक युवाप्रतिदिन अत्यधिक आवाज़ में संगीत सुनने के कारण भविष्य में सुनने की क्षमता खोने के खतरे में हैं। भारत में भी यह प्रवृत्ति तेजी से बढ़ रही है। 2024 की एक सर्वे रिपोर्ट के अनुसार, शहरी युवाओं में से लगभग 78 प्रतिशत प्रतिदिन चार घंटे से अधिक समय तक हेडफोन का उपयोग करते हैं। कई विद्यार्थी और किशोर तो दस-दस घंटे तक इनसे जुड़े रहते हैं। दिल्ली स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (AIIMS) के एक अध्ययन में यह तथ्य सामने आया है कि शहरी युवाओं में लगभग 15 प्रतिशत लोग आंशिक सुनने की समस्या से जूझ रहे हैं, जिसका मुख्य कारण हेडफोन का अत्यधिक उपयोग है।

दिनभर कानों में गूंजती आवाज़ें, न केवल श्रवण तंत्र को क्षतिग्रस्त करती हैं बल्कि मस्तिष्क पर निरंतर दबाव भी डालती हैं। यही कारण है कि आजकल 'साइलेंस' का अर्थ ही बदल गया है हम शोर के इतने अभ्यस्त हो चुके हैं कि बिना आवाज़ हमें बेचैनी घेर लेती है।

डॉक्टरों का मानना है कि लंबे समय तक हेडफोन में तेज़ संगीत सुनने सेश्रवण नाड़ी को स्थायी नुकसान पहुँचता है। परिणामस्वरूप व्यक्ति को 'टिनिटस' (कानों में निरंतर घंटी या आवाज़ की अनुभूति) जैसी समस्या हो सकती है। धीरे-धीरे सुनने की क्षमता कम होती जाती है, और व्यक्ति को अपने आसपास की ध्वनियाँ धुंधली लगने लगती हैं।इस समस्या की भयावहता यह है कि इसका प्रभाव धीरे-धीरे होता है, न दर्द, न कोई स्पष्ट लक्षण, बस एक अदृश्य मौन जो भीतर घर करता चला जाता है।

कान मानव शरीर का अत्यंत संवेदनशील अंग है। इसकी अंदरूनी झिल्ली और नसें तेज़ ध्वनि के प्रति अत्यंत नाजुक होती हैं। जब हम लगातार 85 डेसिबल से अधिक ध्वनि पर संगीत सुनते हैं, तो धीरे-धीरे ये नसें क्षतिग्रस्त होने लगती हैं। 100 डेसिबल पर केवल पंद्रह मिनट सुनना भी हानिकारक हो सकता है, जबकि 120 डेसिबल की ध्वनि, जो कई हेडफोन और नाइट क्लबों में सामान्य मानी जाती है, कुछ ही मिनटों में स्थायी नुकसान पहुँचा सकती है।

हेडफोन का यह शोर केवल कानों तक सीमित नहीं है; यह मन और व्यवहार तक पहुँच चुका है। जो ध्वनि हमें सुकून देती थी, वही अब हमें बाहरी दुनिया से काटने लगी है। बातचीत कम हो रही है, आत्मीय संबंधों में दूरी बढ़ रही है, और हर व्यक्ति अपने छोटे-से डिजिटल संसार में कैद होता जा रहा है। एक ओर तकनीक हमें जोड़ने का दावा करती है, वहीं यह हमें हमारे आसपास के लोगों से दूर कर रही है। 'वर्चुअल कनेक्शन' के इस युग में वास्तविक संवाद का अभाव सबसे बड़ा मौन संकट बनकर उभरा है।

लंबे समय तक ईयरबड्स कान में लगाए रखने से कानों में हवा का आवागमन रुक जाता है। यह नमी और बैक्टीरिया के पनपने का कारण बनता है, जिससे फंगल या बैक्टीरियल संक्रमण बढ़ने की संभावना रहती है। कानों में खुजली, दर्द, सूजन या मवाद जैसी समस्याएँ आज के युवाओं में आम हो चुकी हैं। तेज़ बीट्स वाले संगीत से मस्तिष्क की तरंगें लगातार उत्तेजित रहती हैं, जिससे ध्यान की एकाग्रता और स्मरण शक्ति दोनों प्रभावित होती हैं।

हेडफोन का असर शरीर के अन्य हिस्सों पर भी दिखाई देने लगा है। ब्लूटूथ या वायरलेस हेडफोन के लंबे उपयोग से सिरदर्द, चक्कर और थकान की शिकायतें आम हो गई हैं। मोबाइल या लैपटॉप की स्क्रीन पर झुककर बैठने से गर्दन और कंधों में जकड़न बढ़ जाती है। लगातार ध्वनि के संपर्क में रहने से न केवल एकाग्रता में कमी आती है, बल्कि बच्चों और किशोरों में व्यवहारिक चिड़चिड़ापन भी देखा जा रहा है। सड़क सुरक्षा की दृष्टि से भी यह खतरनाक प्रवृत्ति है।

परिवहन मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, भारत में हर वर्ष लगभग पंद्रह सौ से अधिक दुर्घटनाएँ ऐसी होती हैं जिनमें हेडफोन लगाए व्यक्ति चेतावनी संकेत या हॉर्न नहीं सुन पाते। रात में हेडफोन लगाकर संगीत सुनना या वीडियो देखना भी नींद की गुणवत्ता को बुरी तरह प्रभावित करता है। जब मस्तिष्क को विश्राम की आवश्यकता होती है, तब लगातार ध्वनि तरंगें उसे सक्रिय रखती हैं। इससे गहरी नींद नहीं आती और व्यक्ति सुबह थका हुआ महसूस करता है। धीरे-धीरे यह आदत तनाव, चिड़चिड़ापन और स्मरण शक्ति की कमजोरी का कारण बन जाती है।

भारत का बदलता शहरी परिदृश्य इस समस्या की जद में है। मेट्रो, बस, पार्क, जिमहर जगह लोग अपने-अपने संगीत संसार में खोए दिखाई देते हैं। भीड़ में रहकर भी एकांत का यह रूप सामाजिक दूरी को बढ़ा रहा है। यह स्थिति विशेष रूप से ग्रामीण अंचलों व आदिवासी समाज में देखने को मिल रही है , जहां जो समाज मूल रूप से सामुदायिक ध्वनियों पर आधारित समाज है-गीत, नृत्य, पर्व-त्योहार, वाद्ययंत्र और समूह-प्रदर्शन इसकी सांस्कृतिक धुरी हैं। लेकिन बदलती तकनीक के साथ हेडफोन, विशेषकर युवाओं में, 'स्टाइल' और आधुनिक पहचान का प्रतीक बन गए हैं।

पिछले पाँच-सात वर्षों में सस्ते स्मार्टफोन और डेटा पैक ने इस प्रवृत्ति को और इन इलाकों में तेज़ किया है। अब स्कूल-कॉलेज जाने वाले छात्रों के साथ-साथ खेतों में काम करते समय, चराई पर जाते हुए या गाँव के रास्तों पर चलते हुए भी युवक-युवतियाँ हेडफोन लगाए दिखाई देते हैं। यह बदलाव केवल एक उपकरण का उपयोग नहीं है, बल्कि एक सांस्कृतिक संक्रमण का संकेत है जिसमें निजी मनोरंजन सामुदायिक ध्वनि-संस्कृति पर हावी होता जा रहा है। इसके परिणामस्वरूप न सिर्फ सामाजिक संवाद कमजोर पड़ रहा है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों का स्थानीय संगीत और सांस्कृतिक मूल्यों से स्वाभाविक जुड़ाव भी कम होता जा रहा है।

वहीं दूसरी ओर ऑनलाइन शिक्षा और मोबाइल गेम्स ने बच्चों को भी हेडफोन से जोड़ दिया है। आठ से चौदह वर्ष की आयु में जब उनकी श्रवण शक्ति और मानसिक विकास पूर्ण रूप से नहीं होता, तब तेज़ आवाज़ और लंबे उपयोग का प्रभाव कई गुना अधिक होता है। विशेषज्ञों के अनुसार, यदि बच्चे प्रतिदिन एक घंटे से अधिक हेडफोन का उपयोग करें, तो सुनने की क्षमता में गिरावट, ध्यान की कमी और व्यवहारिक असंतुलन जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं।अब समय है कि हम इस अदृश्य खतरे को समझें और अपनी संवेदनशीलता को पुनः जगाएँ। संगीत सुनें, पर अपने कानों और मन की सुनने की क्षमता को न खोएँ, क्योंकि जीवन की असली धुन वही है जो हम अपने आस-पास के लोगों, प्रकृति और स्वयं से जुड़कर सुनते हैं।